Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

**उपदेष्टा**

जे अणांचारी थका आचार बतावें,
ते यूंही अन्हाखी कूकें।
जांणें गायां तणां टोलारे मांहिं,
निकेवल गधा ज्यूं भूके।।

जो स्वयं आचारहीन है और दूसरों को आचार का उपदेश देता है वह व्यर्थ ही बकवास कर रहा है। ऐसा लगता है मानो गौओं के टोले में गधा रेंक रहा है।

**– आचार्यश्री भिक्षु**

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 28 • 13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-04-2026 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

# अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को वंदन नमन

**झुका गगन, महका उपवन, जब श्रेयांस ने किया भक्ति-रस दान,**
**'अहोदानं' की दिव्य गूँज से, धन्य हुआ मानव और देव-विमान।**
**तेरापंथ के उज्ज्वल नभ में, महाश्रमण सूर्य सा मान रहे,**
**आचार्य महाश्रमण की राह पे चल, हम अक्षय पथ को जान रहे।।**

**श्रद्धावनत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार**

# महावीर और भिक्षु : दो युगों के दो महापुरुष, एक ही जीवन दर्शन : आचार्यश्री महाश्रमण

## लाडनूं में भगवान महावीर का 2625वां जन्म कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

**लाडनूं।**
**31 मार्च, 2026**

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में भगवान महावीर का 2625वां जन्म कल्याणक महोत्सव भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने भगवान महावीर और तेरापंथ के प्रथम आचार्य, आचार्य भिक्षु के जीवन के बीच कई विस्मयकारी समानताओं को रेखांकित करते हुए मानवता को अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

**महावीर और भिक्षु : एक ही तिथि, एक ही दर्शन**

समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन जैन इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु के जीवन में कई समानताएं हैं-

**जन्म एवं परिवार :** दोनों महापुरुषों का जन्म शुक्ला त्रयोदशी को हुआ, दोनों गृहस्थ जीवन में पाणिग्रहण संस्कार से बंधे और दोनों की एक-एक पुत्री हुई।

**आदिकर व्यक्तित्व :** महावीर जैन तीर्थ के प्रवर्तक थे, तो आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के आदिकर बने।

(शेष पेज 13 पर)

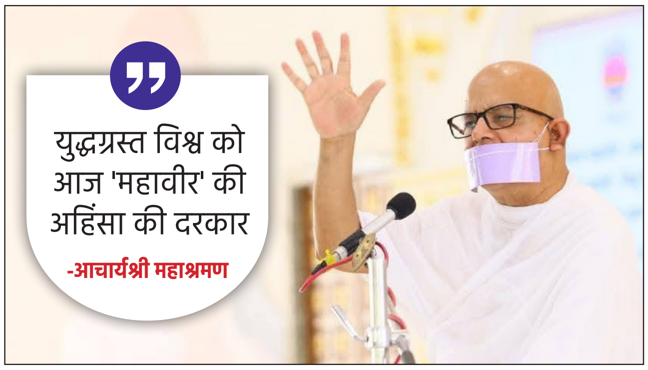

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026
हे प्रभो ! यह तेरापंथ

# सत्य महाव्रत आत्मिक शांति का मार्ग, अल्पभाषी बनकर करें इसकी रक्षा : आचार्यश्री महाश्रमण

## लाडनूं में 'उत्तरज्झयणाणि' आगम पर हुई पावन देशना; साधु-साध्वियों ने किया लेख-पत्र का उच्चारण

लाडनूं।
1 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता एवं युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं की पावन धरा पर 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के माध्यम से सत्य की महत्ता प्रतिपादित की। उन्होंने फरमाया कि जिस प्रकार संसार में जल और अन्न को रत्न माना गया है, उसी प्रकार अध्यात्म की दुनिया में साधु के पाँच महाव्रत पाँच अमूल्य रत्नों के समान हैं, जिनकी सुरक्षा करना हर साधक का परम कर्तव्य है।

**सत्य महाव्रत : केवल सच नहीं, विवेक भी जरूरी :**

आचार्यश्री ने दूसरे महाव्रत 'सत्य' पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि सत्य महाव्रत वास्तव में मृषावाद (झूठ) का पूर्ण त्याग है। उन्होंने एक सूक्ष्म बिंदु की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि केवल सच बोलना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह विवेक रखना भी जरूरी है कि कौन सा सत्य बोलने योग्य है। साधु को सदैव चिंतन पूर्वक और कल्याणकारी सत्य ही बोलना चाहिए।

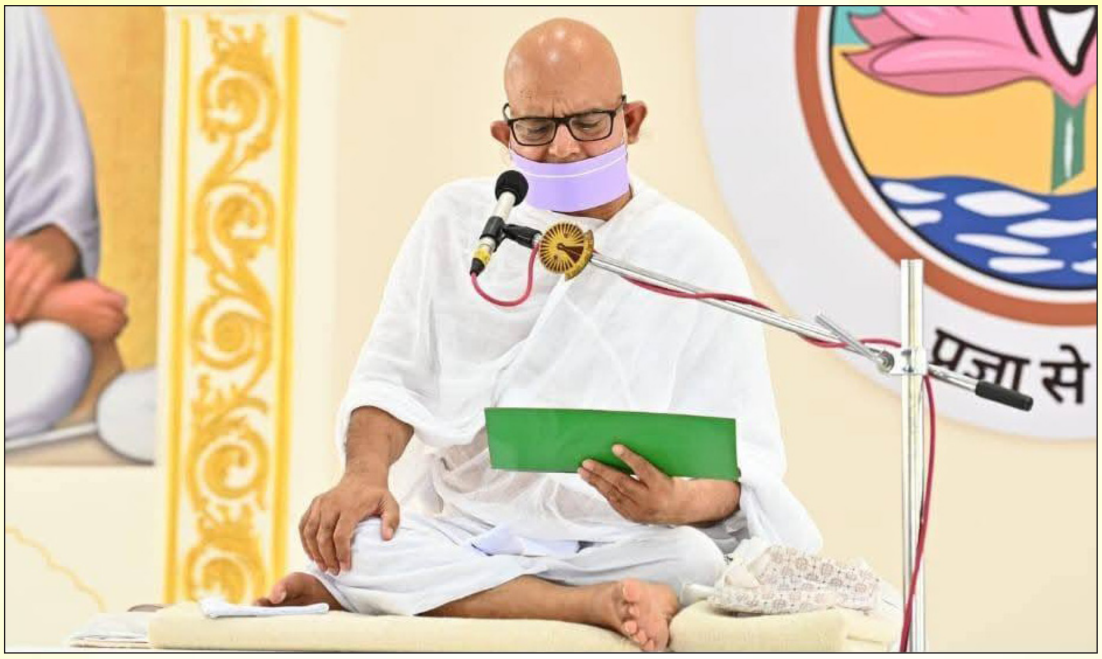

सत्य की साधना के तीन मुख्य सूत्रः गुरुदेव ने प्रवचन के दौरान सत्य को अक्षुण्ण रखने के लिए व्यावहारिक समाधान दिए:

**अल्पभाषिताः** अधिक बोलने से अनजाने में भी असत्य की संभावना बढ़ जाती है। अतः मितभाषी बनना सत्य की आराधना में सहायक है।

**विकारों पर नियंत्रणः** क्रोध, लोभ, भय और यहाँ तक कि अत्यधिक हास्य के वशीभूत होकर व्यक्ति झूठ बोल देता है। साधु को हास्य में भी असत्य से बचना चाहिए।

**प्रायश्चित की शुद्धिः** यदि प्रमादवश मुख से कोई असत्य निकल जाए, तो तत्काल प्रायश्चित द्वारा आत्म-शुद्धि कर लेनी चाहिए।

**गृहस्थों के लिए सत्य-अणुव्रत की प्रेरणाः**

आचार्यश्री ने फरमाया कि जहाँ साधुओं के लिए पूर्ण त्याग का 'महाव्रत' है, वहीं गृहस्थों को 'सत्य-अणुव्रत' का पालन करना चाहिए। यदि समाज का हर व्यक्ति निष्ठापूर्वक सत्य की ओर कदम बढ़ाए, तो संपूर्ण विश्व में नैतिकता और शांति का संचार हो सकता है।

> क्रोध, लोभ और हास्य में भी ना छोड़े सत्य का साथ।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

**संयम की हाजरी और भावाभिव्यक्तिः**

चतुर्दशी के विशेष अवसर पर आचार्यश्री ने सभी चारित्रात्माओं को पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति के पालन हेतु प्रेरित किया। उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर पूरी निष्ठा के साथ 'लेख-पत्र' का उच्चारण किया। कार्यक्रम में ह्यूस्टन सेंटर (USA) से आईं समणी आर्जव प्रज्ञाजी और साध्वी उज्ज्वल रेखाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद द्वारा सुमधुर गीतों का संगान भी किया गया, जिस पर पूज्य प्रवर ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

---

# जहाँ सरलता और शुद्धि, वहीं होता है धर्म का निवास : आचार्यश्री महाश्रमण

## ऋजुता' (सरलता) ही मोक्ष का द्वार, दोषों को छिपाने से नहीं बल्कि स्वीकारने से होती है आत्म-शुद्धि

लाडनूं।
5 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक एवं युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं की पावन धरा पर 'धर्म का निवास कहां?' विषय पर प्रेरक उद्बोधन दिया। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि मोक्ष की प्राप्ति केवल उन्हीं को संभव है, जिनके जीवन में धर्म स्थिर होता है और धर्म केवल सरल हृदय में ही निवास करता है।

**साधन की महत्ता सिद्धि तक :**

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि शास्त्रों में वर्णित चारित्र, संवर और निर्जरा जैसे तत्व मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं। सिद्धि (मोक्ष) प्राप्त होने के बाद इन साधनों का महत्व स्वतः समाप्त हो जाता है, क्योंकि सिद्ध आत्माएं

कृतकृत्य हो जाती हैं। उन्होंने कहा, ₹साधनों की सार्थकता साध्य (लक्ष्य) तक पहुंचने तक ही है।₹

**सरलता ही शुद्धि का आधार :**

आगम वाणी का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने धर्म के निवास की एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों के माध्यम से सूत्र दिया:

1.धर्म कहां ठहरता है? - शुद्ध आत्मा में।

2.शुद्ध कौन होता है? - जो ऋजु (सरल) होता है।

3.पात्रता क्या है? - निश्छलता और सरलता। आचार्यश्री ने फरमाया, ₹जहाँ ऋजुता होती है, वहीं शुद्धि होती है। जो व्यक्ति भीतर से सरल है, वही धर्म को धारण करने का पात्र है।

> "मोक्ष" साधना का अंतिम लक्ष्य, पर "सरलता" ही इसकी पहली सीढ़ी
> -आचार्यश्री महाश्रमण

**दोषों को स्वीकार करना ही प्रायश्चितः**

साधु जीवन का उदाहरण देते हुए आचार्यश्री ने सचेत किया कि यदि जीवन में सरलता नहीं है, तो अनजाने में परिग्रह, चोरी और हिंसा जैसे दोष लग सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक साधु को बालक की भांति निश्छल होना चाहिए। जिस प्रकार बालक माता-पिता के सामने सब कुछ सच कह देता है, वैसे ही साधु को अपने दोषों को गुरु के समक्ष विनम्रता से स्वीकार कर लेना चाहिए। बिना स्वीकारोक्ति के प्रायश्चित संभव नहीं और बिना प्रायश्चित के शुद्धि संभव नहीं।

**संग्रह नहीं, शोधन करें :**

छद्मस्थ अवस्था में गलतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन आचार्यश्री ने सीख दी कि दोषों को इकट्ठा नहीं करना चाहिए। जैसे ही भूल हो, उसका तत्काल प्रायश्चित कर आत्म-शोधन करना चाहिए। प्रवचन के पश्चात पूज्य गुरुदेव ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया और सामूहिक ध्यान का प्रयोग करवाया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026


# नेशनल ट्रेनर वर्कशॉप का दीक्षांत समारोह

**बैंगलोर।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा सीपीएस अकादमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत नेशनल ट्रेनर वर्कशॉप का दीक्षांत समारोह सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, तत्पश्चात विजय गीत का संगान और आस्था की पुष्टि के लिए श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कार्यशाला के विधिवत शुभारंभ की घोषणा करते हुए अध्यक्षीय वक्तव्य दिया।

उन्होंने सीपीएस की प्रारंभ से अकादमी के रूप में विकसित होने तथा सरकारी स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन तक की जानकारी साझा की। एवं सभी प्रतिभागियो के प्रति मंगलकामना की। परिषद् अध्यक्ष विकास बाँठिया ने स्वागत करते हुए प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी, सीपीएस अकादमी के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, सहप्रभारी सोनू जी डागा एवं कोमल जी डागा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत, सह-प्रशिक्षक बबिता रायसोनी सहित अभातेयुप परिवार एवं प्रायोजक परिवार का परिषद् की और से सम्मान किया गया। 80 घंटे निरंतर गतिमान रही। सभी प्रशिक्षुओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

# निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप, डेन्टल चेक-अप एवं त्वचा संबंधित रोगों का परामर्श शिविर

**राजाजीनगर।**

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के 2625 वें जन्म कल्याण के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मानव सेवा के अंतर्गत जैन युवा संगठन द्वारा फ्रीडम पार्क, कुंडलपुर नगरी में आयोजित भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप, डेंटल चेक-अप एवं त्वचा संबंधित रोगों का परामर्श प्रदान किया गया। कैम्प की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। ग्लूकोमीटर से रैंडम ब्लड शुगर एवं रक्तचाप की जाँच कर डॉक्टर से परामर्श हेतु कहा गया, 75 सदस्यों की जांच हुई। त्वचा विशेषज्ञ डॉ.विग्नेश नारायण ने त्वचा संबंधित रोगों का परामर्श प्रदान करते हुए 50 सदस्यों का परीक्षण किया। केएलई डेंटल कॉलेज के सहयोग से 175 सदस्यों का दंत परीक्षण एवं दंत चिकित्सा किया गया। कुल 300 सदस्य लाभान्वित हुए। इस अवसर पर अभातेयुप भूतपूर्व अध्यक्ष एवं युवा गौरव विमल कटारिया,अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी एवं अभातेयुप परिवार,राजाजीनगर सभा के अध्यक्ष अशोक चौधरी शिविर में पधारकर युवाओं को प्रोत्साहित किया। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में अध्यक्ष जितेश दक,मंत्री अनिमेष चौधरी,किशोर मंडल से सयंम बोहरा का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

# 'कैसे करें स्मृति का विकास' कार्यशाला का आयोजन

**उत्तर कोलकाता।**

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 'स्मृति विकास'कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर कोलकाता द्वारा विनायक एन्क्लेव में कम्युनिटी हॉल में किया गया। जिसका विषय था- कैसे करें स्मृति का विकास'कार्यशाला में अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। इस अवसर पर उद्‌बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जीवन की सफलता का मुख्य आधार है - स्मृति विकास । हमारा मस्तिष्क चैतन्य शक्ति का अक्षय भंडार है। यह किसी सुपर कम्प्यूटर से कम नहीं है। विस्मृति वर्तमान की ज्वलंत समस्या है। इस समस्या से हर वर्ग, हर जाति, हर सम्प्रदाय के लोग ग्रसित है। इस समस्या से निजात पाने के लिए सकारात्मक सोच, जप, तप, ध्यान भोजन विवेक आदि कि प्रयोग कारगर सिद्ध हो सकते हैं। स्मृति विकास के लिए महाप्राण ध्वनि, ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, ज्ञान मुद्रा, ताडासन, कोणासन, पाद हस्तासन समपादासन, शशांक आसन, सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा आदि के प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। ॐ ऐं ऊं, ॐ नमो नमस्य का जप अध्ययन में निरंतरता व प्रसन्नता का भाव भी स्मृति विकास में सहयोगी होता है।

मुनिश्री ने स्मृति विकास के लिए ध्यान के प्रयोग कराते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की। सहमंत्री विरेन्द्र विनायक ने आभार व्यक्त किया।

# अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 'संगम' कार्यक्रम का विशिष्ट आयोजन

**लाडनूं।**

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वचन एवं मंगल पाठ का श्रवण कर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की टीम ने त्रिदिवसीय विराट युवती सम्मेलन – 'संगम' का भव्य शुभारंभ किया। देश-विदेश से आई लगभग 1000 युवती बहनें उत्साह, उमंग एवं समर्पण के भाव के साथ इस सम्मेलन में सहभागी बनी जिससे पूरे आयोजन ऊर्जावान और प्रेरणादायी बन गया।

**प्रथम दिवस : भक्ति और प्रतिभा का सुंदर समन्वय**

परिचय सत्र का शुभारंभ जयपुर सी-स्कीम युवती विभाग द्वारा मंगलाचरण से हुआ, जिससे समूचा वातावरण भिक्षुमय बन गया। इसके पश्चात युवती बहनों ने आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए गीतिकाओं के माध्यम से प्रभावशाली प्रस्तुतियां दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा ने अपने प्रेरक उद्बोधन में युवतियों को महिला मंडल से जुड़कर सक्रिय भूमिका निभाने और समाज निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। साथ ही 'नारीलोक' पत्रिका के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों की विजेता बहनों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

**द्वितीय दिवस : प्रेरणा, ज्ञान और अभिव्यक्ति का उत्कर्ष**

विविध प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक सत्रों से परिपूर्ण रहा। उद्‌घाटन सत्र में मुख्य वक्ता RJ कार्तिक ने "FAMILY" सूत्र—Forgiveness, Acceptance, Mutual Respect, Inspiration, Love, You—के माध्यम से युवतियों को जीवन मूल्यों की सुंदर दिशा दी। इसके पश्चात आयोजित सत्र में 9 साध्वी प्रमुखाओं की आध्यात्मिक जीवन यात्राओं की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने पूरे परिसर को "ॐ अर्हम" की पावन ध्वनि से गुंजायमान कर दिया। विशेष आकर्षण रहा गुरुदेव इंगित पंच परमेष्ठी गीतिकाओं पर आधारित क्विज़ प्रतियोगिता, जिसमें 66 प्रतिभागी युवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और ज्ञान का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। द्वितीय दिवस के अंतिम सत्र में विभिन्न क्षेत्रों की युवतियों ने सामाजिक विषयों—जैसे सोशल मीडिया का प्रभाव, पारिवारिक मूल्यों, जैन जीवन शैली, संस्कृति संरक्षण एवं आधुनिकता—पर अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ दीं, जिसने सभी को चिंतन हेतु प्रेरित किया।

**तृतीय दिवस : अनुशासन, ऊर्जा और आध्यात्मिक उत्कर्ष का दृश्य**

तृतीय दिवस पर विशाल रैली का आयोजन किया गया, जिसमें भारत एवं नेपाल के 22 राज्यों से आई युवतियों ने अनुशासन और उत्साह के साथ भाग लिया। "जय-जय ज्योतिचरण, जय जय महाश्रमण" एवं "लिखें शक्ति की नई ऋचाएँ, अनुशासन के दीप जलायें" जैसे उद्घोषों से पूरा परिसर ऊर्जा से भर उठा। सम्मेलन का भव्य समापन परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में हुआ। 108 युवतियों द्वारा पंच परमेष्ठी गीतिकाओं की सामूहिक प्रस्तुति ने आध्यात्मिक वातावरण को और भी दिव्य बना दिया। अपने मंगल पाथेय में आचार्य प्रवर ने युवतियों को पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आत्मिक—चारों आयामों में संतुलित विकास का संदेश दिया। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने आधुनिकता के साथ आध्यात्मिकता के समन्वय पर बल देते हुए "क्वालिटी ऑफ लाइफ" को प्राथमिकता देने की प्रेरणा दी। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने सद्गुणों के विकास और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने का संदेश प्रदान किया। इस अवसर पर युवती विभाग की गतिविधियों पर आधारित एक प्रेरणादायी डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा ने सम्मेलन की रूपरेखा एवं गतिविधियों का निवेदन प्रस्तुत किया तथा महामंत्री रचना हिरण ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

# अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

## भगवान ऋषभ के पारणे के उपलक्ष में मनाया जाता है अक्षय तृतीया पर्व

● मुनि कमल कुमार ●

हर पर्व के पीछे कोई घटना प्रसंग अवश्य होता हैं। जैन धर्म एक आध्यात्मिक धर्म है, जिससे आत्मा, स्वास्थ, प्र्यावरण सबका हित सधता है। जैन धर्म में भी कई पर्व मनाये जाते है। जिससे लोगों में आध्यात्मिक संस्कार बढ़ते रहे।

कई पर्वों में एक पर्व है अक्षय तृतिया, यह पर्व जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभ नाथ भगवान के पारणे के उपलक्ष में मनाया जाता हैं। भगवान ऋषभ ने चैत्र कृष्णा अष्टमी से तप प्रारंभ किया। नवमी को दीक्षा ग्रहण की परंतु जनता को मिथा चर्चा की जानकारी नहीं होने के कारण तेरह महिने दस दिन तक भगवान ऋषभ गोचरी के लिए श्रमण करते रहे। परंतु प्रासुक एवं आहार पानी की उपलब्धि नहीं होने के कारण इतना लंबा समय व्यतीत हो गया।

एक दिन भगवान के प्रपोत्र श्रेयांस कुमार को मेरू सिंचन का स्वप्न आया और सुबह भगवान के ज्योति दर्शन हुए, उसने सोचा इनसे बढकर मेरू कौन हो सकता है। घर में भेट स्वरूप इक्षु घट के घड़े आये हुए थे।

श्रेयांस ने भगवान गोचरी की अर्ज की। भगवान को तो ज्ञान था कि यह जो भावना भा रहा है। वह पदार्थ शुद्ध है भगवान महलों की तरफ बढ़े श्रेयांस ने उच्चभावों से भगवान को इक्षु रस बहराया। भगवान के पारणे से केवल मनुष्यों को ही नहीं देवताओं को भी प्रसन्नता की अनुभूति हुई और देवताओं ने प्रसन्तता प्रकट करते हुए अहोदानं अहोदानं की ध्वनि की। तब से अब तक समग्र जैन समाज में ही नहीं अन्य लोगों में वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन एक विशेष खुशी का माहौल देखने को मिलता है।

जैन समाज में भगवान की उस तीव्र तपस्या के उपलक्ष में वैसा तो नहीं परंतु चैत्र वदि अष्टमी से वैशाख शुक्ला तृतिया के उपलक्ष में वैसा तो नहीं एक दिन छोड़कर एक दिन उपवास करके तप करने का क्रम देखने को आज भी मिलता है।

किसान लोग तीज पर खेती की जुताई करते है, कई लोग अक्षय तृतिया दिन को शुभ मानकर विवाह, दुकान– मकान, संस्थानों का मुहुर्त करते है। अक्षय तृतीया को अपूछ सावा भी सुनने को मिलता है। कई घरों में आमली खीचड़ा का प्रचलन देखने को मिलता है। गुजरात और राजस्थान में आम लोग छतों पर पतंग उड़ाते हुए नजर आते हैं।

वास्तव में तो हमें इस दिवस पर तप जप का विशेष प्रयास करना चाहिये, जिससे भगवान की तरह हमारा भी कल्याण हो सके।

तेरापंथ समाज में इस वर्ष अक्षय तृतीया उत्सव महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य मे लाडनूं जैन विश्वभारती में मनाया जाएगा। इस वर्ष योगक्षेम वर्ष होने के कारण आगंतुक तपस्वियों का मनोहारी दृश्य देखने का और सैकड़ों साधु-साध्वियों के दर्शनों का भी योग मिल सकेगा।

## कैसे उत्कृष्ट वर्षीतप करे!

● मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार ●

अक्षय तृतीया एक महान पर्व है यह पर्व तप एवं त्याग के साथ जुड़ा हुआ है। भगवान ऋषभ देव ने इस दिन उनकी तपस्या का इक्षु रस से पारणा किया। इसलिए इसको अक्षय तृतीया कहा जाता है। प्रतीकात्मक रूप से तेरह महीने के एकान्तर तप कर के मनाते हैं। बहुत सारे लोग इस तप को करते हैं किन्तु सभी इस तप को तो नही कर सकते है। भगवान ऋषभदेव ने यह तप 400 दिन का निर्जल निराहार तप किया था परन्तु आज वह शारीरिक शक्ति नही है, इसलिए आज प्रतीकात्मक रूप से एक दिन उपवास और एक दिन पारणा करते हैं। यह तो तपस्या के रूप में है परन्तु इसे नये तरीके से भी किया जाए तो यह नया वर्षीतप नये रुप में होगा। एक वर्ष तकरीबन क्रोध विजय का वर्षीतप करें, एक वर्ष तक नये वस्त्र खरीदने का त्याग कर के किया जाए, एक वर्ष प्रतिदिन एक घंटे स्वाध्याय करके किया जाए–स्वाध्याय भी आगम का किया जाए, एक वर्ष में प्रतिदिन 54 लोग्गस का ध्यान करके किया जाए, एक वर्ष प्रतिदिन आधा घंटा ध्यान दीर्घ श्वास प्रेक्षा के अभ्यास के साथ किया जाए और ऐसे अनेक प्रकार है जो वर्षीतप तपस्या के रूप में किया जा सकता है। आगम तप अथवा निर्जरा के बारह भेद बतायें गए हैं किसी भी एक भेद की साधना करके आत्म विशुद्धी के पथ पर चरण न्यास किया जा सकता है। भगवान ने कर्म निर्जरा के द्वारा आत्मा को भावित करने का उपाय बताया है। वर्षीतप की साधना करने वाले तों कठिन साधना करते ही है परन्तु क्रोध विजय आदि अन्य प्रकार की साधना करके भी आत्मा को भावित किया जा सकता है।

## अनमोल विरासत–अनमोल इतिहास : अक्षय तृतीया

● मुनि कुमुद कुमार ●

**सौभाग्यशाली परिवार**

अंतिम कुलकर नाभि की धर्मपत्नी मरुदेवा की कुक्षी से ऋषभ का जन्म हुआ। प्रभु ऋषभ का परिवार सौभाग्यशाली रहा। जो हम सभी के लिए गौरवशाली है। इस अवसर्पिणी काल के प्रथम राजा, प्रथम साधु, प्रथम भिक्षुक, प्रथम केवली, प्रथम तीर्थंकर, भगवान ऋषभदेव हुए। इस अवसर्पिणी काल में सर्वप्रथम सिद्ध बनी माता मरुदेवा। प्रथम चक्रवर्ती बना राजा भरता। इस देश का नाम भारत ऋषभनाथ के पुत्र राजा भरत के नाम से हुआ। वृंदावन में प्रवासित प्रेमानन्दजी महाराज ने भी इस तथ्य को अपने उद्गार में व्यक्त किया है। चक्रवर्ती राजा भरत ने राजमहल में रहते-रहते केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। पुत्र बाहुबली ने भी मोक्ष को प्राप्त किया। पौत्र मरीचि इसी अवसर्पिणी काल में अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। प्रभु ऋषभ की सारी संताने सौ पुत्र एवं दो पुत्री ने संयम को अंगीकार किया। दोनों ही पुत्रियों का नाम सोलह महासतियों में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित है। साठ हजार वर्ष तक कठोर आयम्बिल तप की साधना पुत्री सुंदरी ने की जो अपने आप में एक अमिट आलेख है। प्रथम दान दाता का गौरव प्रपौत्र श्रेयांस कुमार ने प्राप्त किया। ऐसे गौरवशाली दुर्लभ संयोग प्रभु ऋषभ के परिवार को प्राप्त हुए।

**कुशल नेतृत्व**

राजा ऋषभ का शासन प्रारम्भ हुआ। कालचक्र के बढ़ते प्रवाह के कारण कल्पवृक्ष जो कि सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। धीरे-धीरे खत्म होने लगे। राजा ऋषभ का युग परिवर्तन का युग बना। प्रकृति परिवर्तन के साथ-साथ अनेक विकट समस्याएं भी जन्म लेने लगी। आपसी व्यवहार, सम्बंध में कटुता आने लगी। राजा ऋषभ ने सूझ-बूझ से असि, मसि, कृषि का ज्ञान देकर न केवल जनमानस को त्राण दिया अपितु विकास का रास्ता भी प्रशस्त किया। वहीं से उपयोगी पदार्थों का अविष्कार प्रारम्भ हुआ। राजा का उत्तरदायित्व होता है-प्रजा की सुरक्षा, राज्य में अमन-चैन, आत्मतोष, जनजीवन को सर्वांगीण रूप से सक्षम बनाना। असि, मसि, कृषि के चिंतन से प्रजा को सात्विक गर्व हुआ अपने गौरवशाली कुशल नेतृत्व पर। शांत, सुखी, संतोषी जीवन जीने का मानो मूल मंत्र मिल गया हो।

**साधना आत्मतत्व की**

जब राजा ऋषभ ने साधुत्व को धारण किया तब चार हजार व्यक्तियों ने उनके साथ संन्यास को स्वीकार किया। साधुत्व स्वीकार कर प्रभु ऋषभ आत्म साधना में तल्लीन हुए। ध्यान, मौन संयम में स्थित आत्मा विशुद्धि की ओर गतिमान थी। प्रभु अपने आप में स्थिर रहते थे। भिक्षा के समय भ्रमण करते उसके अलावा सम्पूर्ण समय आत्मसाधना में लगता। अप्रमत चेतना कैवल्य की ओर आगे बढ़ रही थी। प्रभु आदिनाथ के साथ चार हजार व्यक्तियों ने दीक्षा स्वीकार की कर्मयोग से सभी चले गए। प्रभु एकत्व की भावधारा में सततलीन रहते। चार हजार व्यक्तियों का एक-साथ दीक्षित होना ओर फिर उन सभी का चले जाना संयोग-वियोग के इस उपक्रम में उनका जीवंत संदेश मिला ३एकला चलो३ क्योंकि प्रभु संयोग एवं वियोग दोनों से ऊपर उठ गए थे। हम सभी के लिए एक प्रेरणा है ममत्व से उपरत रहने की। उनकी शुक्ल ध्यान में अवस्थित जागृत चेतना राग-द्वेष की तरंगों से तरंगित नहीं हुई।

**तृतीया जो अक्षय बन गई**

प्रभु ऋषभ के पूर्व में बंधे हुए अंतराय कर्म उदय में आए जिसके कारण उन्हें आहार पानी उपलब्ध नहीं होता। प्रभु भिक्षा के लिए हस्तिनापुर के राजमार्ग से जा रहे थे। महल के ग्वाक्ष में राजा श्रेयांस बैठे हुए थे। प्रभु पर दृष्टिपात होते ही उन्हें अपने गत रात्रि में आए स्वप्न की स्मृति ताजा हो गई कि म्लान मेरु पर्वत को मैं सिंचित कर रहा हूं। राजा श्रेयांस तुरंत महल से उतर कर राजमार्ग पर आकर प्रभु आदिनाथ को वंदन किया एवं भिक्षा के लिए अनुरोध किया। प्रभु महल में पधारे। संयोग से उसी दिन इक्षु रस के घड़े भेंट स्वरूप आए हुए थे। शुद्ध प्रासुक इक्षुरस का प्रभु को निवेदन किया। प्रभु ने अवधिज्ञान से देखा और अपने दोनो हाथों की अंजुली आगे की। राजा श्रेयांस कुमार ने प्रभु को इक्षुरस का दान दिया। जैसे ही प्रभु ने दान ग्रहण किया आकाश में देवताओं ने 'अहोदानं अहोदानं' का घोष किया। पंच रत्नो की वर्षा हुई। तब तक लोग भिक्षा विधि से अनजान थे। उस दिन लोगों ने भिक्षा विधि एवं उसके महत्व को समझा जाना। वह दिन था वैशाख शुक्ला तृतीया का वह तृतीया अक्षय बन गई। उस दिन प्रभु आदिनाथ के तेरह माह दस दिन की निराहार तपस्या का पारणा हुआ। आज तीसरे से पांचवा आरा आ गया। हजारों वर्ष व्यतीत होने के उपरांत भी उसी स्मृति में हजारों-हजारो व्यक्ति वर्षीतप की साधना करते हैं। एकांतर तपाराधना कर अपने कर्मो की निर्जरा कर रहे हैं। अक्षयतृतीया का यह पर्व जैन धर्म में प्रभु आदिनाथ के साथ जुड़ा हुआ है। इस दिन के बारे में हम चिंतन करें अनजाने में राजा ऋषभ के बंधे हुए अंतराय कर्म के कारण से उन्हें तेरह महीने दस दिन आहार उपलब्ध नहीं हुआ। जानबूझकर जो हम किसी को अंतराय देते हैं तो सोचे उसका परिणाम क्या होगा ? आगमवाणी का सूत्रांश है- ३कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि३ किए हुए कर्म को भोगे बिना छुटकारा मिलता नहीं है। हमारा भाव रहे कि धर्म के पथ पर किसी को अंतराय नहीं देकर अपितु सहयोग करेंगे जिससे कर्म का बंधन न होकर उससे मुक्ति पा सकें। यह अक्षय तृतीया का पर्व प्रभु ऋषभ की स्मृति के साथ-साथ हमे यह भी संदेश देता है कि हमारी आत्मा भी प्रभु ऋषभ की तरह कर्म का क्षय कर अक्षय अमर पद को प्राप्त करें। इस पर्व को हम न केवल परम्परा के रूप में मनाए बल्कि कर्म बंधन एवं कर्म मुक्ति पर चिंतन-मनन करेंगे तभी इस पर्व की सार्थकता होगी।

# अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

## अक्षय तृतीया : आत्मा की अनंत ज्योति का पर्व

● मुनि अभिजित कुमार ●

अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत पावन पर्व है, जिसे सामान्यतः शुभ कार्यों, दान और नई शुरुआतों से जोड़ा जाता है। किन्तु यदि हम इसके आध्यात्मिक आयाम को समझें, तो यह केवल बाहरी उत्सव नहीं, बल्कि आत्म-जागरण और चेतना के उत्कर्ष का दिन है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य बाहरी संग्रह नहीं, बल्कि अपने भीतर के अक्षय स्वरूप की पहचान है।

**अक्षय तृतीया का गूढ़ अर्थ :** "अक्षय" का अर्थ है जो कभी नष्ट न हो, जो अनंत और शाश्वत हो। "तृतीया" का अर्थ है तीसरी तिथि। इस प्रकार अक्षय तृतीया वह क्षण है, जब मनुष्य अपने भीतर स्थित उस चेतना से जुड़ने का प्रयास करता है, जो समय, परिस्थिति और परिवर्तन से परे है। यह केवल नए कार्य आरंभ करने का दिन नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानने का अवसर है।

**भगवान ऋषभदेव की तपस्या :** त्याग और दान की परंपरा जैन परंपरा में अक्षय तृतीया का विशेष महत्व है, क्योंकि यह भगवान ऋषभदेव की तपस्या से जुड़ा हुआ है। उन्होंने 13 महीनों तक कठोर तप किया, किन्तु उन्हें आहार प्राप्त नहीं हुआ। अंततः उनके पौत्र श्रेयांस कुमार को स्वप्न में प्रेरणा मिली और उन्होंने भगवान को गन्ने का रस (इक्षुरस) अर्पित किया। यह केवल एक तप का समापन नहीं था, बल्कि कालचक्र में प्रथम दान की शुरुआत थी। इसी घटना के स्मरण में आज भी यह दिन "परणा महोत्सव" के रूप में मनाया जाता है, जो त्याग, सेवा और दान की भावना को पुनर्जीवित करता है। कर्म और जीवन की चुनौतियाँ- भगवान ऋषभदेव को इतने लंबे समय तक आहार न मिलना कोई संयोग नहीं था, बल्कि यह कर्म सिद्धांत की गहन व्याख्या है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में आने वाली हर परिस्थिति, चाहे वह सुखद हो या कष्टदायक, हमारे अपने ही कर्मों का परिणाम है। अतः समाधान बाहरी दोषारोपण में नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन और आत्म-स्वीकार में निहित है।

**इक्षुरस का संदेशः मधुरता ही मार्ग है:** श्रेयांस कुमार द्वारा अर्पित गन्ने का रस केवल आहार नहीं, बल्कि एक गहरा प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जीवन की कठोरताओं और संघर्षों का समाधान मधुरता, करुणा और सहजता से ही संभव है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तनावपूर्ण वातावरण में यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है कि हम अपने व्यवहार में मधुरता लाएँ, कठिनाइयों को सहजता से स्वीकारें, और केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी मार्ग प्रशस्त करें। सच्चा साधक वही है जो विघ्न उत्पन्न नहीं करता, बल्कि विघ्नों को दूर करने वाला बनता है।

**तीसरा नेत्र :** आंतरिक चेतना का जागरण- अक्षय तृतीया को आध्यात्मिक दृष्टि से "तीसरे नेत्र" के जागरण का प्रतीक भी माना जा सकता है। यह तीसरा नेत्र कोई भौतिक अंग नहीं, बल्कि हमारी अंतर-दृष्टि और जागरूकता का प्रतीक है। जब यह जागृत होता है, तब मनुष्य सत्य को स्पष्ट रूप से देख पाता है, अहंकार का अंधकार समाप्त होता है और आत्मा की वास्तविक प्रकृति प्रकट होने लगती है।

**वैदिक परंपरा और ज्योतिषीय महत्व :** हिंदू परंपरा में अक्षय तृतीया को अत्यंत शुभ और स्वयं सिद्ध मुहूर्त माना गया है, अर्थात् इस दिन किसी भी कार्य को आरंभ करने के लिए अलग से मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती। ज्योतिष के अनुसार इस दिन सूर्य मेष राशि में और चंद्रमा वृषभ राशि में अपनी उच्च स्थिति में होते हैं, जिससे ऊर्जा, स्थिरता और समृद्धि का अद्भुत संतुलन बनता है। मान्यता है कि इस दिन किए गए पुण्य कर्म, दान, जप, तप या नए कार्य अक्षय फल प्रदान करते हैं, अर्थात् उनका शुभ प्रभाव दीर्घकाल तक बना रहता है। इसी कारण इस दिन स्वर्ण क्रय, निवेश, विवाह, गृह प्रवेश और नए उपक्रमों की शुरुआत को विशेष रूप से शुभ माना जाता है।

**अर्हता से अर्पण तक :** अक्षय तृतीया में दान का वास्तविक अर्थ- अक्षय तृतीया को परंपरागत रूप से दान का पर्व माना गया है, परंतु आज आवश्यकता है कि हम दान के वास्तविक अर्थ को समझें। दान केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि स्वार्थ से परे जाकर स्वयं को अर्पित करने की प्रक्रिया है। आज के संदर्भ में "निवेश" का अर्थ केवल सोना-चांदी या संपत्ति में निवेश नहीं होना चाहिए, बल्कि यह होना चाहिए अपने भीतर के खजाने में निवेश जहाँ व्यक्ति अपने अहंकार, इच्छाओं और स्वार्थ को त्यागकर पूर्णतः समर्पण में उतरता है।

इतिहास में भी, जब भगवान ऋषभदेव को आहार देने की परंपरा प्रारंभ हुई, तब समाज को दान का सही स्वरूप समझ में आया। पहले लोग वस्तुओं का दान तो जानते थे, परंतु सही समय, सही भावना और सही पात्र को अर्पण का ज्ञान नहीं था।

इसी संदर्भ में "गोचरी" का विशेष महत्व है, जहाँ साधु-संतों को भोजन और जल अर्पित किया जाता है। यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि यह भाव है कि "हमारे घर में जो भी है, वह केवल हमारा नहीं, बल्कि समाज और जरूरतमंदों का भी है।"

**अन्न का सम्मान :** अक्षयता की सच्ची परीक्षा- आज के समय में अक्षय तृतीया का सबसे बड़ा संदेश केवल दान नहीं, बल्कि अन्न के प्रति जागरूकता भी है। हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ एक ओर लोग भोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं, और दूसरी ओर आयोजनों और घरों में अन्न का अत्यधिक अपव्यय हो रहा है। अन्न का अपमान केवल संसाधनों की बर्बादी नहीं, बल्कि यह हमारी संवेदनहीनता का प्रतीक है। अक्षय तृतीया हमें सिखाती है जितना आवश्यक हो उतना ही लें। भोजन को प्रसाद की तरह सम्मान दें अतिरिक्त अन्न को जरूरतमंदों में वितरित करें जब हम अन्न का सम्मान करते हैं, तभी जीवन में अक्षयता का वास्तविक प्रवाह होता है।

**निष्कामता और सहजता :** देने की पूर्णता- दान का सर्वोच्च रूप वह है, जहाँ देने के बाद कोई अपेक्षा शेष न रहे। एक सुंदर भाव यह भी है कि जब हम भोजन बनाते हैं, तो हम केवल क्रिया में होते हैं, परंतु जब भोजन तैयार हो जाता है, तब उसमें कृतज्ञता और स्मरण का भाव जुड़ता है। यही भाव दान को साधारण क्रिया से उठाकर आध्यात्मिक साधना बना देता है।

**आधुनिक जीवन में अक्षय तृतीया का महत्व :** आज के युग में अक्षय तृतीया को प्रायः भौतिक समृद्धि, खरीदारी और निवेश से जोड़ा जाता है। किन्तु इसका वास्तविक उद्देश्य हमें आंतरिक समृद्धि की ओर प्रेरित करना है। यदि हम इस दिन को सही दृष्टि से अपनाएँ, तो यह हमारे जीवन में स्थायी परिवर्तन ला सकता है। हम अपने जीवन में पाँच मूल सिद्धांतों को अपनाकर इस पर्व को सार्थक बना सकते हैं-

**स्वीकार (Acceptance) :** जो है, उसे सहज रूप में स्वीकारना

**समझ (Understanding) :** हर परिस्थिति को सीख के रूप में देखना

**शर्करा (Sweetness) :** व्यवहार में मधुरता और कोमलता लाना

**सजगता (Awareness) :** अपने भीतर की चेतना से जुड़ना

**सहजता (Ease) :** जीवन को सरल, प्राकृतिक और तनावमुक्त ढंग से जीना

जैसे भगवान ऋषभदेव की तपस्या भी बाहरी रूप से कठोर होते हुए भी भीतर से पूर्णतः सहज और स्थितप्रज्ञ थी, वैसे ही सच्चा साधन वह है जिसमें प्रयास हो, पर तनाव न हो; अनुशासन हो, पर बोझ न हो। यही पाँच "S" जीवन को बनाते हैं।

**अक्षय :** सुख जो कभी समाप्त नहीं होता।

**निष्कर्ष :** अक्षयता की ओर एक कदम

अक्षय तृतीया हमें यह सिखाती है कि वास्तविक अक्षयता धन, वस्तुओं या बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, जागरूकता और संतुलन में है। यह पर्व हमें बाहरी संसार से हटकर अपने भीतर झाँकने, अपने अस्तित्व को समझने और जीवन को एक उच्चतर उद्देश्य से जोड़ने का अवसर देता है।

## रोम-रोम से निकले भगवन्

● मुनि हिमकुमार ●

रोम-रोम से निकले भगवन् नाम तुम्हारा हां नाम तुम्हारा
मरुदेवा के लाल लाडले वंदन लो हमारा।। ध्रुव ।।

दीक्षा ली थी जब प्रभु ने, लोग थे अज्ञानी,
नहीं जानते थे बहराना, अन्न और पानी,
तप संयम आराधना से, तोड़ी कर्म की कारा।।
रोम- रोम से निकले...

जिसने सब कुछ छोड दिया, बन गया समताधारी,
अपनी ही पहचान से, मिट गई दुविधा सारी,
योगीश्वर के ज्ञान स्वरूप से, जग पाए उजियारा।।
रोम -रोम से निकले...

आदि कर्ता प्रभुवर ने, मोक्ष मार्ग दिखलाया,
करुणा मैत्री प्रेम से, अमृत रस बरसाया,
त्रिभुवनतारी नेत्रहारी बन गया सबल सहारा।।
रोम-रोम से निकले....

अक्षय तृतीया आई, नई रोशनी लाई,
सुपात्र दान की, महिमा जग में छाई,
वर्षीतप की साधना से, मिट जाए अंधियारा।।
रोम-रोम से निकले...

**तर्ज - जन्म जन्म का साथ है...**

## जीवन कथा सुनाते हैं

● साध्वी राकेश कुमारी ●

प्रथम जिनेश्वर आप्त पुरुष की जीवन कथा सुनाते हैं
अक्षयतीज पावन पर्व गौरव गाथा गाते हैं
जय जय ऋषभ प्रभो ॥ध्रुव ॥

भरत क्षेत्र में विनितानगरी जिसकी स्वर्गोपम उपमा
इक्ष्वाकु कुल नाभि राजा, महारानी मरुदेवा मां
कुल में लिया अवतार जिसका नाम ऋषभ नन्दन प्यारा
दिग्दिगन्त में बांटे खुशियां बहती आनन्द की धारा
जन्माभिषेक पर हर्षोल्लास मनाने सुरगण आते है ॥1॥

सामाजिक प्रथा चलाई, सुमंगला सुनन्दा शादी कर
किया मानव का उत्थान, लौकिक कलाएं सिखलाकर
अनन्त उपकार किया विश्व का वो महामानव अवतारी
भरत बाहुबल सौ पुत्र अरु. दो पुत्रियां ब्राह्मी सुन्दरी
अध्यात्मपथ पर अभिनिष्क्रमण आगे कदम बढ़ाते है ॥2॥

भारत भू पर विचरण बिचरत नगरी गजपुर (हस्तिनापुर) पधराये
बैलों के छिंकी बांधी वो अन्तराय कर्म उदय आये
घर-घर घूम रहे भिक्षा हित जन भिक्षा विधि नहीं जानते
हीरा पन्ना माणक मौती थाल भर भर कर लाते
मौनी बाबा नहीं लेते है आगे चरण बढ़ाते है ॥3॥

राज भवन में सपना देखा, श्रेयांस पौता सौभागी
मेरुपर्वत को मैं सींचू, तकदीर मेरी है जागी
इक्षुरस से हुआ पारणा, वो अक्षय तीज अमर हुई
पंचदिव्य रत्नों की वृष्टि, फूलों की बरसात हुई
ब्रह्माण्ड में (तीन लोक) आलोक फैला, दुन्दुभि देव बजाते है ॥4॥

वर्षीतप की स्वस्थ परम्परा सुनलो अमर कहानी है
हजारों तपसी तपस्या करते, वर्षीतप की निशानी है
वर्षीतप करने वालों को सौ-सौ साधुवाद है
महातपस्वी महाश्रमण का मिलता आशीर्वाद है
ऋषभनाथ के यशोगीत का तप परचम फहराते हैं ॥5॥

दीक्षा लेकर कर्मकाटकर केवलज्ञान का वरण किया
दिव्य संदेशों उपदेशों से, जनता का कल्याण किया
ऋषभनाथ का जाप जपो ॐ ऋषभाय नमः मंगलकारी
महाउपकारी ऋषभ प्रभु की जाती 'राकेश' बलिहारी
प्रथम तीर्थंकर ऋषभप्रभु को श्रद्धा सुमन चढ़ाते है। ॥6॥

**तर्ज – आओ बच्चों तुम्हे....**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026

# अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

## भगवान ऋषभ और श्रेयांसकुमारः भव भ्रमण यात्रा

● साध्वी मंजुलयशा ●

भगवान ऋषभ जैन धर्म के अलौकिक महापुरुष हुए है। 4000 लोगों के साथ दीक्षा लेने वाले ऋषभ कि साधना अद्भुत थी। साधिक तेरह महीनों तक निराहार तप करने वाले भगवान ऋषभ का पारणा उनके प्रपौत्र श्रेयांसकुमार के हाथों से हुआ ।

प्रश्न हैं ? ऐसा क्यों ? उनका पारणा श्रेयांस के हाथ से ही क्यों हुआ? उनके परिवार के अन्य अनेक सदस्य भी थे । भरत, बाहुबली, ब्राह्मी, सुन्दरी और उनके 98 पुत्र, माता मरुदेवा आदि अनेक पारिवारिक, जन होते हुए भी क्यों प्रकृति ने श्रेयांस कुमार को Select किया।

तो इसके लिए हमे जानना होगा उनका पूर्व भव। वह ऋणानुबंध जिसके कारण भगवान ऋषभ और श्रेयांस का सम्बन्ध बना ।

पूर्व के लगभग 8 भवों से ऋषभ और श्रेयांस का सम्बन्ध था और नवमें भव में वे बनते हैं भगवान ऋषभ और प्रपौत्र श्रेयांस कुमार । इतिहास के झरोखे में ....

**पहले भव**

दूसरे इशान देवलोक में श्रीप्रभ नामक विमान के अधिपति ललितांग देव थे। उसकी प्रधान देवी का नाम स्वयंप्रभा था। दोनों का पारस्परिक राग भाव प्रबल था। यह स्वयं प्रभा श्रेयांस की आत्मा हैं। और ललितांग भगवान ऋषभ की आत्मा हैं।

**दूसरा भव**

ललितांग देव के रूप में आयु पूर्ण कर भगवान ऋषभ की आत्मा में महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय में स्थित लोहार्गल नगर के राजा स्वर्णजंघ की महारानी लक्ष्मी की कुक्षि से पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। उसका नाम वज्रजंघ रखा गया। पूर्व भव की देवी स्वयंप्रभा का जीव इसी विजय की पुण्डरीकिणी नगरी के नरेश वज्रसेन की पुत्री श्रीमती के रूप में उत्पन्न हुआ।

श्रीमती युवा हुई। एक दिन वह महल की छत पर बैठी थी। उस समय कुछ देवविमान उसे दृष्टिगोचर हुए। उन्हें देखकर उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। उसे अपने पूर्व भव के पति ललितांग देव का स्मरण हो गया। उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस जन्म में मेरे पति वे ही होंगे। जब तक वे नहीं मिलेंगे, मैं किसी से नहीं बोलूंगी।

श्रीमती की पंडिता नामक अभिन्न सखी थी। वह बहुत चतुर थी। उसने अपनी सहेली के मौनव्रत के कारण को जान लिया। श्रीमती की सहायता से पंडिता ने ललितांग देव के श्रीप्रभ विमान का चित्र (Sketch) बनाया और उसमें कुछ त्रुटियां रहने दी। उस चित्रपट को राजपथ पर टांग दिया। राजकुमार वज्रजंघ घूमते-घूमते उधर से निकला। राजपथ पर टंगे उस चित्रपट को देखकर उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। उसने उस चित्रपट में रही त्रुटियों को ठीक कर दिया। इस बात की जानकारी श्रीमती व उसके पिता वज्रसेन को लगी। खूब धूमधाम से श्रीमती का वज्रजंघ के साथ विवाह कर दिया।

दोनों सुखपूर्वक रहने लगे। दोनों ने दीक्षा स्वीकार करने के निश्चय के साथ सोए कि कल पुत्र का राज्याभिषेक करना है। अपने माता-पिता को मारकर राज्य प्राप्त करने के लिए राजकुमार ने उनके कमरे में विषमिश्रित धुआं छोड़ दिया जिससे वे दोनों मृत्यु को प्राप्त हो गए।

**तीसरा भव**

परिणामों की सरलता के कारण राजा वज्रजंघ व रानी श्रीमती का जीव उत्तरकुरु क्षेत्र में तीन पल्योपम आयुमान के यौगलिक बने।

**चौथा भव**

यौगलिक आयु भोगकर दोनों पहले सौधर्म देवलोक में देव बने ।

**पांचवा भव**

जंबूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र स्थित क्षितिप्रतिष्ठ नगर में सुविधि वैद्य रहता था। सौधर्म देवलोक से च्यव कर वज्रजंघ का जीव उस वैद्य का पुत्र बना। उसका नाम रखा गया जीवानंद। श्रीमती का जीव देवायु भोगकर उसी नगर के श्रेष्ठी ईश्वरदत्त का केशव नाम से पुत्र हुआ। लगभग उसी समय उसी नगर में चार अन्य बालकों ने जन्म लिया- पहला राजपुत्र महीधर, दूसरा मंत्रीपुत्र सुबुद्धि, तीसरा श्रेष्ठीपुत्र गुणाकर तथा चौथा सार्थवाह पुत्र पूर्णभद्र। ये छहों बचपन से अंतरंग मित्र थे। इनकी मैत्री प्रगाढ़ थी। सभी मित्र अपनी-अपनी कुल परंपरा के अनुरूप कार्य में निष्णात बन गए और कार्य में संलग्न बन गए।

एक दिन पांचों मित्र जीवानंद वैद्य के घर पर बैठे थे। उस समय एक तपस्वी मुनि उधर से निकले। सबको लगा-मुनि व्याधिग्रस्त हैं। अपने मित्र जीवानंद वैद्य से उपचार के बारे में पूछने पर उसने बताया- 'प्रतिकूल आहार आदि कारणों से मुनि के शरीर में कृमिकुष्ठ रोग उत्पन्न हो गया लगता है। इनका इलाज तो संभव है पर उसके लिए अपेक्षित सामग्री में से लक्षपाक तेल तो मेरे पास है पर अन्य दो वस्तुएं रत्नकंबल व गोशीर्ष चंदन मेरे पास नहीं हैं। इतनी व्यवस्था हो जाए तो मैं इलाज कर दूंगा।'

पांचों साथी इसके लिए बाजार में गए। नगर के एक बड़े व्यापारी की दुकान पर रत्नकंबल व गोशीर्ष चंदन के बारे मे पूछा तो उनका मूल्य दो लाख मुद्रा बताया। व्यापारी ने इतनी कीमती वस्तुओं के भाव पूछने का कारण जानना चाहा तब उन्होंने तपस्वी मुनि के रोगोपचार के लिए इन वस्तुओं को आवश्यक बताया। तरुणों की सेवा भावना व श्रद्धा से प्रभावित होकर व्यापारी ने बिना मूल्य लिए दोनों वस्तुएं उनको दे दी। छहों मित्र ध्यानावस्थित मुनि के पास पहुंचे। वैद्यपुत्र जीवानंद ने मुनि को वंदन किया, पूरे शरीर पर लक्षपाक तेल का मर्दन किया और रत्नकंबल से आवेष्टित कर दिया। शरीर में स्थित कृमि बाहर आ गए। रत्नकंवल को हटाया और फिर गोशीर्ष चंदन का लेप किया। मुनि को पूर्ण निरोग देखकर सभी मित्र परम प्रसन्न हुए। मुनि के उपदेश से सभी ने श्रावक धर्म स्वीकार किया। कालांतर में सभी मित्रों ने दीक्षा स्वीकार की। अंतिम समय में अनशनपूर्वक समाधि मृत्यु को प्राप्त किया।

**छठा भव**

वहां से मरकर वे छहों बारहवें अच्युत देवलोक में महर्धिक देव वने।

**सातवां भव**

जंबूद्वीप के पूर्व महाविदेह की पुष्कलावती विजय में लवण समुद्र के पास पुंडरीकिणी नगरी में राजा वज्रसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम धारिणी था। इसी भव में बारहवें देवलोक से वैद्य जीवानंद का जीव धारिणी की कुक्षि से पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। गर्भ में आने पर माता ने चौदह महास्वप्न देखे । चक्रवर्ती पुत्र के जन्म की भविष्यवाणी से सबको प्रसन्नता हुई। पुत्र का नाम वज्रनाभ रखा गया। कालांतर से जीवानंद के शेष चार मित्र देवायु भोगकर धारिणी के उदर से उत्पन्न हुए। वे वज्रनाभ के छोटे भाई हुए। उनके नाम क्रमशः ये थे-बाहु, सुबाहु, पीठ और महापीठ। उसका छठा मित्र केशव का जीव भी वहां किसी अन्य राजा के महल में सुयश नामक पुत्र बना। वह भी बाल्यकाल से यहीं रहने लगा। ये छहों राजपुत्र साथ में रहते थे। पूर्व जन्म के स्नेह वश इनमें गहरी मित्रता थी। महाराज वज्रसेन अपने ज्येष्ठ पुत्र वज्रनाभ को राज्य सौंपकर दीक्षित हुए। केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद वज्रसेन ने तीर्थ की स्थापना की और तीर्थंकर बने।

कुछ समय बाद वज्रनाभ की आयुधशाला में चक्र रत्न की उत्पत्ति हुई। चक्ररत्न की सहायता से वे चक्रवर्ती बने। उनके चार भाई मांडलिक राजा बने। सुयश चक्रवर्ती का सारथी बना। इस भव में भी भगवान ऋषभ और श्रेयांस की आत्मा सबसे निकट रही। एक बार तीर्थंकर वज्रसेन पुंडरीकिणी नगरी में पधारे। समवसरण की रचना हुई। तीर्थंकर की देशना हुई। भगवान् के उपदेश से वैराग्य को प्राप्त राजा वज्रनाभ ने अपने पुत्र को राज्य सौंपा और देवाधिदेव वज्रसेन से दीक्षित हो गए। बाहु, सुबाहु, पीठ, महापीठ एवं सुयश ने भी साधुत्व को स्वीकार किया।

मुनि वज्रनाभ ने निरतिचार संयम का अनुपालन करते हुए तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया। बाहु व सुबाहु मुनि अत्यन्त सेवाभावी थे। वृद्ध, ग्लान, रोगी व बाल साधुओं के लिए तो वे आश्रय स्थल थे। वे निरंतर सेवा में संलीन रहते थे। विशुद्ध व निस्पृह सेवावृत्ति के कारण दोनों मुनियों ने उच्चतर पुण्यप्रकृति का बंध किया। पीठ तथा महापीठ मुनि ज्ञानार्जन करते रहते थे। प्रवचन करने व समझाने की कला में वे अत्यन्त कुशल थे। एक बार गुरु के श्रीमुख से बाहु व सुबाहु मुनि की प्रशंसा सुनकर पीठ व महापीठ मुनि के भीतर ईर्ष्या व मत्सर भाव जागृत हो गया। इस कारण दोनों मुनियों के स्त्री वेद का बंध हो गया। सुयश मुनि ने उत्कृष्ट साधना की। अंतिम समय में छहों मुनिवरों ने पादोपगमन अनशन स्वीकार किया।

**आठवां भव**

वहां से आयु संपन्न कर अगले भव में तेंतीस सागरोपम स्थिति वाले सर्वार्थसिद्ध विमान में देव बने।

**नवमां भव**

वहां से च्यवकर मुनि वज्रनाभ का जीव ऋषभदेव बने । बाहु मुनि का जीव भरत चक्रवत, सुबाहु मुनि का जीव बाहुबली के रूप में जने । पीठ मुनि ने ब्राह्मी व महापीठ मुनि ने सुंदरी के रूप में जन्म लिया। सारथी सुयश मुनि ने श्रेयांसकुमार के रूप में जन्म लिया जिन्होंने इक्षु रस का दान देकर दान की स्वस्थ परंपरा का शुभारंभकिया। इन नव भावों तक साथ रहने वाले भगवान ऋषभ और श्रेयांस की आत्मा इस अवसर्पिणी काल के प्रथम याचक और प्रथम दाता बन गए।

## जय-जय मरुदेवा नन्दन

● नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ●

जय-जय मरुदेवा नंदन, झुक झुक के करते है वंदन।
उत्थान करो भक्तों का जिनवर, आदिम बाबा।।

हर घर के आगे जा रुकते, भक्त भावना भाते हैं,
हीरे, पन्ने, माणक, मोती, रत्न सामने लाते हैं ।
भिक्षा विधि का ज्ञान नहीं, देने की पहचान नहीं।।
उत्थान करो.....

श्री श्रेयांसकुमार पौत्र था, निद्रा में आया सपना,
मैं मेरु को सींच रहा हूं, भाग्य मानता है अपना ।
प्रातः द्वार प्रभु आए, दर्शन कर मन हरसाए ।।
उत्थान करो.....

प्रासुक इक्षुरस प्रांगण में कृपा कराओ हे स्वामी,
कर्म निर्जरा का अवसर दो, आदिनाथ अन्तर्यामी।
इक्षु रस फिर बहराया, देवों ने मंगल गाया।।
उत्थान करो.....

दिव्य दिवस अक्षय तृतीया का, मिलजुल आज मनाएं हम,
कर वर्षीतप प्रभु के पथ पर अपने कदम बढ़ाएं हम।
तेरापंथ हमें प्यारा, महाश्रमण का बरतारा।।
उत्थान करो.....

**लय - मेहंदी रची थारे हाथां में**

## आदिश्वर वन्दना...

● मुनि मोहजीत कुमार ●

प्रभु आदिश्वर, करूणा सागर,
हे जग के अखिलेश।।

अन्तरयामी तुमने राह दिखाई जग को धर्म की
करके तपस्या प्रभु तोड़ी जंजीरे बान्धे कर्म की
भाग्य विधाता, जीवन त्राता, हे जन जन हृदयेश।।

प्रथम बने थे याचक प्रथम ही कहाए, प्रभुवर तीर्थंकर
मानव संस्कृति का जो मंत्र दिया था अभिनव राजेश्वर
महक उठी, वह माटी जिस पर दिया सत्य सन्देश।।

धन्य हुई मानवता पा उस सच्चे अणगार को
शीश झुकाएं हम सब मिलकर संस्कृति के अवतार को
स्वच्छ बनाए, दिल का दर्पण, ध्या कर ध्यन हमेश।।
वन्दना चरणों में।।

## शिव ऋषभ एक व्यक्ति

● मुनि मुकुल कुमार ●

आई आखा तीज महान, धरें हम ऋषभ प्रभु का ध्यान।
मन, वच, काया कर प्रणिधान।।

अद्भुत यह तिथि अक्षय है, देखे शुभ मुहूरत मय है।
सबके कार्य बनें फलवान।।

चाहे लौकिक लोकोतर, महिमा जग में उत्तरोत्तर।
सत शिव सुंदर की पहचान।।

प्रभु ने संयम स्वीकार, प्रकटी तप की शुभ धारा।
करने आत्मा का कल्याण।।

शिव ऋषभ एक व्यक्ति हैं, दो धारा इक शक्ति है।
इसका है इतिहास प्रमाण।।

जो पुण्यश्लोक आत्माएं, तप से निज कर्म खपाएं।
बनें सब संत मुकुल भगवान।।

**लय- हमारे भाग्य बड़े.**

# अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

## आदिपुरुष भगवान ऋषभनाथ : तीन सूत्रों ने गढ़ा आधुनिक भारत

● श्रेयाँस कोठारी, जयपुर ●

भारत केवल एक देश नहीं, एक संस्कृति की सतत यात्रा है। यह यात्रा यूँ ही आगे नहीं बढ़ी, इसके पीछे कुछ ऐसे मूल सूत्र हैं, जिन्होंने मानव जीवन को दिशा, दशा और दृष्टि दी। जैन परंपरा कहती है, जब मानव जीवन अनगढ़ था, तब आदि पुरुष भगवान ऋषभनाथ ने उसे आकार दिया। उन्होंने केवल धर्म नहीं सिखाया, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाई। असि, मसि और कृषि, ये तीन शब्द नहीं, बल्कि सभ्यता के तीन स्तंभ हैं। और यदि गहराई से देखें, तो आज का विकसित भारत, उस पहली शिक्षा का ही विस्तृत रूप है।

**1. "कृषि" : आत्मनिर्भर भारत की जड़**

भगवान ऋषभनाथ ने जब "कृषि" सिखाई, तब उन्होंने केवल अन्न उगाना नहीं सिखाया, उन्होंने सिखाया आत्मनिर्भर होना। आज वही भावना हमें दिखती है—

- स्टार्टअप इंडिया में युवा अपने "बीज" बो रहे हैं।
- ग्रामीण उद्यमिता गाँवों को सशक्त बना रही है।
- ऑर्गेनिक फार्मिंग प्रकृति के साथ संतुलन बना रही है।

कृषि का असली अर्थ है निर्भरता से स्वतंत्रता की ओर बढ़ना। यही कारण है कि भारत आज विश्व में आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से बढ़ रहा है।

**2. "मसि" : ज्ञान से महानता तक**

"मसि" यानी लेखन, ज्ञान, अभिव्यक्ति। भगवान ऋषभनाथ ने मानव को सोचने और सीखने की शक्ति दी। आज उसी "मसि" का आधुनिक रूप है—

- डिजिटल इंडिया : ज्ञान हर हाथ में
- नई शिक्षा नीति (NEP) : कौशल और संस्कार
- इनोवेशन और रिसर्च : भारत वैश्विक मंच पर

लेकिन यहाँ एक गहराई छिपी है, ज्ञान केवल जानकारी नहीं, चरित्र निर्माण का साधन है। यही "मसि" भारत को बुद्धि से महान बना रही है।

**3. "असि" : शक्ति नहीं, संरचना का आधार**

"असि" का अर्थ केवल शस्त्र नहीं, बल्कि व्यवस्था और सुरक्षा है। भगवान ऋषभनाथ ने सिखाया समाज को सुरक्षित और संगठित कैसे रखा जाए। आज यह रूप ले चुका है: मजबूत प्रशासन और व्यवस्था, अनुशासित सुरक्षा तंत्र, जिम्मेदार नेतृत्व और गवर्नेंस; पर उनका मूल संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, शक्ति का उद्देश्य संरक्षण हो, प्रदर्शन नहीं।

यदि हम तीनों को जोड़ें, कृषि (आत्मनिर्भरता), मसि (ज्ञान), असि (व्यवस्था) तो बनता है एक संतुलित और उन्नत राष्ट्र। आज भारत तकनीक में आगे है, अर्थव्यवस्था में बढ़ रहा है, पर उसकी असली ताकत है—उसकी जड़ें। आदिपुरुष भगवान आदिनाथ का संदेश हमें याद दिलाता है "विकास तभी स्थायी है, जब उसमें मूल्य जुड़े हों।"

भगवान ऋषभनाथ ने जो बीज बोए थे, आज वही वटवृक्ष बनकर भारत को छाया दे रहे हैं।

- हर स्टार्टअप में "कृषि" की आत्मनिर्भरता है
- हर स्कूल में "मसि" की चेतना है
- हर व्यवस्था में "असि" का संतुलन है

और यही कारण है कि भारत केवल आगे नहीं बढ़ रहा, बल्कि सही दिशा में बढ़ रहा है। आज हमें कुछ नया खोजने की जरूरत नहीं है, बस पुराने मूल्यों को नए रूप में जीने की जरूरत है। आदि पुरुष ऋषभनाथ का संदेश आज भी उतना ही स्पष्ट है "जो जड़ों से जुड़ा है, वही ऊँचाइयों को छूता है।"

## अक्षय तृतीया (आखा तीज)

● प्रदीप छाजेड़, बोरावड़ ●

भगवान ऋषभ के समय काल में परिवर्तन के साथ व्यवस्थाओं में भी बदलाव आया था। श्रम करो,शांति से जीओ आदि का नारा पा अनेक नोजवानों आदि - आदि ने हाथ आगे बढ़ाया था। उस समय कल्पवृक्ष ने फल देना बंद कर दिया था तब भगवान् ऋषभ ने लोगो को कृषि कर्म करना सिखाया था। खेतों में अनाज बोने से हर चीज उत्पन्न होगी आदि- आदि हर कार्य विधि बहुत सावधानी से उन्होंने बताया था। परन्तु लोगों के बौद्धिक विकास के अभाव में जितना उनको बताया जाता था उतना ही वे समझ पाते थे उससे आगे करने की उनकी विवेक समझ लोगों में नहीं थी। बैलों को घुमाकर अनाज निकालने की विधि में भूखे बैल ही अनाज सारा खा जाते थे।

यह देखकर तब चिंतित यौगलिक मिलकर भगवान् ऋषभ के पास आएं तो उनको भगवान् ऋषभ ने घास की रस्सियों की छींकी बैलों को कैसे लगाए वो समझा दी। एक दाना भी फालतू नही गया यह सोच किसानों के चेहरे मुस्कुरा गयें। परन्तु भूखें बैलों के सामने चारा रखा वो नहीं खा पाने से लोग बहुत विकुलाये।यह सोच लोग वापस भगवान् ऋषभ के पास गये और बोले की ऐसे तो भूख से बैल मर जायेंगे।

यह इतने व्याकुल हृदय होकर उन्होंने अपनी बात भगवान् ऋषभ को बतायी। बैलों के छींकी खोलने की बात से वह बिल्कुल अनजान थे। वह किसान भगवान् ऋषभ से सही से समाधान पा हर्षविभोर हो गये। असि, मसि,कृषि कर्म सिखाने के साथ दंड, सेवा,वर्ण,ग्राम व्यवस्था आदि-आदि का दायित्व भी भगवान् ने बखूबी निभाया। वह तत्काल भगवान् ऋषभ के पास जाकर उनके चरणों मे विधिवत वंदन कर प्रासुक आहार की श्रेयांश कुमार ने भावना भाई।

वह शुद्ध आहार में इक्षु रस के एक सौ आठ घड़े भरे होने की बात भगवान् को उन्होंने बताई। राजकुमार श्रेयांश ने उल्लसित भावना से इक्षुरस का दान दिया था। भगवान् ऋषभ ने भी दोनों हथेलियों को सटाकर मुख से इक्षुरस को लगा लिया था। अपने पूर्व में बंधे अंतराय कर्मों के उदय का विपाक इस तरह से सामने में आया था। वह अनजाने में बारह घंटे बंधी छींकी का परिपाक आज ही के दिन भगवान् ने पाया था। स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त आखा तीज, वैशाख मास शुक्ल पक्षधारी, इक्षु रस पान से वर्षीतप पारणा करने की यह विधि आदिनाथ प्रभु के भव से शुरू हुई।

आज का पावन पर्व हमें अंतराय कर्म से बचने की शिक्षा देता है।आदिनाथ भगवान ने बिना किसी रागद्वेष के भाव से सिर्फ जब बैल सारा अनाज खा लेते थे तो किसानों के निवेदन पर भगवान ने सिर्फ बैलों को छिंकी बांधने की बात कही थी। 12 घण्टों तक यह छिंकी बंधे रहने से बैलों को जो कष्ट हुआ उसके परिणामस्वरूप भगवान् को कई गुणा मल्टीप्लाई होकर 13 महीने 9 दिन तक कोई आहार पानी नहीं मिला। उसके बाद दसवें दिन अपने प्रपौत्र को जातिस्मृति ज्ञान होने पर ही गोचरीविधि की जानकारी होने से पारणा भगवान् का हुआ।

हम सब सचेत होकर किसी भी जीव को अंतराय देने से बचने की अपने विवेक से प्रतिज्ञा लेकर कर्मों से हल्के होते हुए कर्म मुक्त होने की तरफ आगे बढ़े।सभी के प्रति यहीं मंगलभाव।

## युवा सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

**गाँधीनगर दिल्ली।**

तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर दिल्ली द्वारा आयोजित प्रेरणादायी युवा सम्मेलन ( Connect जुड़े और जोड़े) का आयोजन अत्यंत उत्साह और ऊर्जा के साथ बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी स्वामी ठाणा-3 के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष क्रांति बरड़िया द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया तथा तेयुप साथियों द्वारा प्रस्तुत विजय गीत ने युवाओं में जोश और उमंग का संचार किया। मुख्य आकर्षण के रूप में बहुश्रुत मुनिश्री ने "कर्तव्य के आलोक में युवा शक्ति" विषय पर अपना प्रेरणादायी पाथेय प्रदान किया। मुनिश्री ने सरल और प्रभावी शब्दों में युवाओं को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया जिसने सभी उपस्थित युवाओं के मन को गहराई से स्पर्श किया। इसके पश्चात तेयुप अध्यक्ष क्रांति बरड़िया द्वारा स्वागत व्यक्तव्य प्रस्तुत किया गया। विशिष्ट वक्ता संजय खटेड़ ने "युवाओं को संगठन में कैसे जोड़े और स्वयं कैसे जुड़े" विषय पर अपने ओजस्वी विचार रखते हुए संगठन के युवाओं में नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार किया। कार्यक्रम के दौरान तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के 11 माह के कार्यों का एक प्रभावशाली वीडियो प्रस्तुतीकरण भी किया गया जिसने संगठन की सक्रियता और उपलब्धियों को दर्शाया। दूसरे वक्ता संदीप बरड़िया ने आज के आधुनिक युग में युवाओं के लिए निवेश के सही मार्ग पर गहन एवं सारगर्भित मार्गदर्शन दिया जो सभी के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। अंत में कोषाध्यक्ष संदीप पुगलिया द्वारा आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सुंदर और प्रभावी संचालन मंत्री प्रकाश सुराणा द्वारा किया गया। अभातेयुप प्रवृति सलाहकार व परामर्शक जतन श्यामसुखा व TKM Blue Brigade Committee Member विश्रुत जैन की उपस्थित रही।

## भिक्षु भजन संध्या का हुआ भव्य आयोजन

**दिल्ली।**

टीपीएफ दिल्ली द्वारा आयोजित भिक्षु भजन संध्या अत्यंत भव्य एवं सफल रही। श्रद्धानिष्ठ गायक कमल सेठिया ने अपने मधुर भजनों से उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह भजन संध्या अपनी भव्यता और विशालता के कारण अपने आप में अद्वितीय सिद्ध हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया एवं संपूर्ण समाज का पूर्ण सहयोग सराहनीय रहा।

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष शुभकरण बोथरा ने आदरणीय के. एल. जैन साहब की अनुपस्थिति में अपनी टीम के साथ आत्मीय सहयोग प्रदान किया तथा उनका प्रेरक उद्बोधन सभी के लिए मार्गदर्शक रहा। दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त हुआ।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है। — आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026

## संबोधि

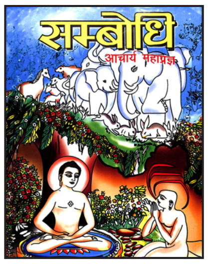


### परिशिष्ट

**-आचार्यश्री महाप्रज्ञ**

## श्रमण महावीर

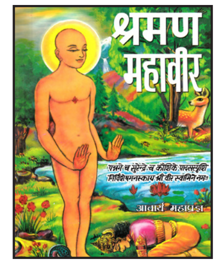


### चक्षुदान

### ध्यान और मुनि

साधक इस संकल्प साधना पथ पर अग्रसर होता है–

**'अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि।**
**अन्नाणं परियाणामि, नाणं उपसंपज्जामि।**
**अबंभं परियाणामि, बंभं उपसंपज्जामि।'**

मैं साधना के प्रतिकूल मार्ग को छोड़ता हूं और सम्यक् मार्ग की संपदा स्वीकार करता हूं। मैं अज्ञान से विरत होता हूं और सम्यक् ज्ञान की आराधना में प्रस्तुत होता हूं। मैं बहिर्भाव को त्यागता हूं और स्वभाव की साधना में प्रवृत्त होता हूं।

इन संकल्पों की सतत स्मृति और तदनुरूप प्रवर्तन ही ध्यान की सिद्धि में उपादेय है। जब साधक स्वभाव से मुंहमोड़, पुनः परभाव की ओर उन्मुख हो जाता है, तब ध्यान का अंकुर मुरझा जाता है, सूख जाता है और जल जाता है। इसके साथ उसकी समस्त वृत्तियां लक्ष्य से विमुख हो जाती हैं। आचार्य शुभचंद्र ने उन्हें आड़े हाथों लिया है। वे कहते हैं- 'वह यति-मुनि कैसे ध्यान-सोपान पर आरूढ हो सकता है जिसके जो कर्म में है, वह वचन में नहीं है और जो वचन में है, वह मन में नहीं है। जिसकी कथनी, करनी और चिंतन में एकरूपता नहीं है।' 'जो बाह्य परिग्रह को छोड़कर भी विविध परिग्रह में जुड़े रहते हैं, संयम में अधीर हैं तथा कीर्ति, पूजा और अहंकार में आसक्त हैं, लोकरंजन में कुशल हैं, सद्ज्ञानचक्षु विलुप्त हो गया है वे कैसे ध्यान में योग्य हो सकते हैं।' इसके साथ-साथ जो यह कहते हैं कि यह दुःषम-काल है। इस समय ध्यान की योग्यता कहां है? वे ध्यान का अपकर्ष करते हैं। जो भोग से विरत, ज्ञानशून्य चित्तवाले, तथा करुणार्द्रहृदय नहीं हैं, वे ध्यान में सक्षम नहीं हो सकते। वे ही साधक अपने ध्यान की प्राप्ति में सफल होते हैं जो अपने लक्ष्य, निष्ठा और मुमुक्षावृत्ति से विमुख नहीं होते तथा उसे विस्मृत नहीं करते।

पातञ्जल योगदर्शन में धारणा और समाधि को अलग स्थान दिया है। जैन परम्परा में वे दोनों ध्यान के अंतर्गत हैं। धारणा ध्यान का प्राथमिक चरण है और समाधि अंतिम। ध्यान मध्य में है। ध्यान का ही प्रकृष्ट रूप समाधि है। ध्यान को समझ लेने पर यह अविज्ञात नहीं रहेगा। चित्त को किसी एक स्थान पर केन्द्रित करना धारणा है। उसी में लंबे समय तक टिका रहना ध्यान है और समाधि है, अपने स्वरूप के सिवाय किसी अन्य का आभास नहीं होना। जैनाचार्यों ने ध्यान के संबंध में कहा है- 'एकाग्रचिन्तायोगनिरोधो वा ध्यानम्'- किसी एक ही विषय का चिंतन, एक विषय पर स्थिरीकरण और योग (काय, वाणी तथा मन के समस्त व्यापारों) का निरोध करना ध्यान है। समग्र प्रवृत्तियों का सर्वथा निरोध ध्यान का उत्कृष्टतम रूप है। वहां शुद्ध चैतन्य - अस्तित्व के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहता। सीधा इसमें प्रवेश सर्वसाधारण के लिए असहज है। ध्येय यही है। किन्तु यहां तक पहुंचने के लिए मन को पहले धारणा एकाग्रचिंतन के द्वारा तदनुरूप बनाना आवश्यक है। धारणा ध्यान की सहयोगिनी है। इसे सालम्बन या व्यावहारिक ध्यान कहा जा सकता है। निरावलंबन ध्यान पारमार्थिक है। जिसमें ध्येय परमात्मा रहता है। आचार्य जिनभद्र के अनुसार स्थिर चेतना ध्यान और जल चेतना चित्त कहलाता है-

**'जं थिरमज्झवसाणं तं झाणं, जं चलं तयं चित्तं ।'**

आचार्य रामसेन के विचार से एक आलंबन पर अंतःकरण की वृत्ति का निरोध ध्यान है। उसी प्रकार चिंतन रहित केवल स्व-संवेदन भी ध्यान है-

'अभावो वा निरोधः स्यात्, स च चित्तान्तरव्ययः ।
एकश्चिन्तात्मको यद् वा, स्वसंविच्चिन्ततोज्झिता ।।'

आचार्य महाप्रज्ञजी ने लिखा है- 'जैन आचार्य ध्यान को अभावात्मक नहीं मानते। इसके लिए किसी न किसी एक पर्याय का आलंबन आवश्यक है। स्व-संवदेन ध्यान को निरालंबन ध्यान कहा जाता है किंतु यह सापेक्ष शब्द है। इसमें किसी श्रुत के पर्याय का आलम्बन नहीं होता-इस दृष्टि से यह निरालंबन है। निरालंबन ध्यान में ध्याता और ध्येय भिन्न नहीं होते। उसमें शुद्ध चेतना का ही उपयोग होता है। सालंबन ध्यान में ध्येय और ध्याता का भेद होता है। जैन साधकों का यह अनुभव है कि प्रारंभ में सालंबन ध्यान करना चाहिए। **(क्रमशः)**

'भंते! मैं पिछले जन्म में हाथी था? मेघ ने जिज्ञासा की।'

भगवान ने बताया- 'मेघ, तुम अतीत की दिशा में प्रयाण करो और देखो। इससे तीसरे जन्म में तुम हाथी थे- विशाल और सुन्दर। तुम वैताढ्य पर्वत की उपत्यका के वन में रहते थे। ग्रीष्म ऋतु का समय था। वृक्षों के संघर्षण से आग उठी। तेज हवा का सहारा पा वह प्रदीप्त हो गई। देखते-देखते पोले पेड़ गिरने लगे। वनांत प्रज्वलित हो उठा। दिशाएं धूमिल हो गईं। चारों ओर अरण्य पशु दौड़ने लगे। उस समय तुम भी अपने यूथ के साथ दौड़े। तुम्हारा यूथ आगे निकल गया। तुम बूढ़े थे, इसलिए पिछड़ गए। दिशामूढ हो दूसरी दिशा में चले गए। तुमने एक सरोवर देखा। पानी पीने के लिए उसमें उतरे। उसमें पानी कम था, पंक अधिक। तुम तीर से आगे चले गए, पानी तक पहुंचे नहीं, बीच में ही पंक में फंस गए। तुमने पानी पीने के लिए सूंड को फैलाया। वह पानी तक नहीं पहुंच सकी। तुमने पंक से निकलने का तीव्र प्रयत्न किया। तुम निकले नहीं, और अधिक फंस गए। उस समय एक युवा हाथी वहां आया। वह तुम्हारे यूथ का था। तुमने उसे दंत-प्रहार से व्यथित कर यूथ से निकाला था। तुम्हें देखते ही उसमें क्रोध का उफान आ गया। वह तुम्हें दंत-प्रहार से घायल कर चला गया। तुम एक सप्ताह तक कष्ट से कराहते रहे। वहां से मरकर तुमने गंगा नदी के दक्षिणी कूल पर विन्ध्य पर्वत की तलहटी में फिर हाथी का जन्म लिया वनचरों ने तुम्हारा नाम रखा मेरुप्रभ।

**'एक बार वन में अकस्मात् दावानल भड़क उठा। तुम अपने यूथ के साथ वन से भाग गए। दावानल ने तुम्हारे मन में विचित्र-सा कंपन पैदा कर दिया। तुम उस गहरे आघात की स्थिति में स्मृति की गहराई में उतर गए। तुम्हें वह दावानल अनुभव किया हुआ-सा लगा। तुम अनुभव की यात्रा पर निकल गए। आखिर पहुंच गए। पूर्वजन्म की स्मृति हो गई। वैताढ्य के वन का दावानल आँखों के सामने साकार हो गया।**

'तुमने अतीत की स्मृति का लाभ उठा एक मंडल बनाया। उसे सर्वथा वनस्पति-विहीन कर दिया। एक बार फिर दावाग्नि से वन जल उठा। पशु पलायन कर उस मंडल में एकत्र होने लगे। तुम भी अपने यूथ के साथ उस मंडल में आ गये। देखते-देखते वह मंडल पशुओं से भर गया। अग्नि के भय से संत्रस्त होकर वे सब वैर-विरोध को भूल गए। समूचा मंडल मैत्री-शिविर जैसा हो गया। उसमें सिंह, हिरण, लोमड़ी और खरगोश सब एक साथ थे। उसमें पैर रखने को भी स्थान खाली नहीं रहा।

**'तुमने खुजलाने को पैर ऊंचा उठाया। उसे नीचे रखते समय पैर के स्थान पर खरगोश को बैठे देखा। तुम्हारे मन में अनुकम्पा की लहर उठी। तुमने अपना पैर बीच में ही रोक लिया। उस अनुकम्पा से तुमने मनुष्य होने की योग्यता अर्जित कर ली।**

'दो दिन-रात पूरे बीत गए। तीसरे दिन दावानल शांत हुआ। पशु उस मंडल से बाहर निकल जंगल में जाने लगे। वह खरगोश भी चला गया। तुम्हारा पैर अभी अन्तराल में लटक रहा था। तुमने उसे धरती पर रखना चाहा। तुम तीन दिन से भूखे और प्यासे थे। बूढ़े भी हो चले थे। पैर अकड़ गया था। जैसे ही पैर को नीचे रखने का प्रयत्न किया, तुम लुढ़क कर गिर पड़े, मानो बिजली के आघात से रजतगिरि का शिखर लुढ़क पड़ा हो। तीन दिन-रात तुम घोर वेदना को झेलते रहे। वहां से मरकर तुम श्रेणिक के पुत्र और धारिणी देवी के आत्मज बने।

'मेघ! जब तुम तिर्यञ्च योनि में थे, सम्यग्दर्शन तुम्हें प्राप्त नहीं था। तब तुमने खरगोश की अनुकम्पा के लिए ढाई दिन तक पैर को अन्तराल में उठाए रखा। उस कष्ट को कष्ट नहीं माना। तुम्हारा कष्ट अहिंसा के प्रवाह में बह गया। अब तुम मनुष्य हो, सम्यग्दर्शन तुम्हें प्राप्त है, ज्योतिशिखा तुम्हारे हाथ में है, फिर अमा की अंधियारी ने कैसे तुम्हारी आँखों पर अधिकार कर लिया? कैसे तुम थोड़े से कष्ट से अधीर हो गए? श्रमणों का चरण स्पर्श कैसे तुम्हें असह्य हो गया? उनकी किंचित् उपेक्षा कैसे तुम्हारे लिए सिरशूल बन गई?'

मेघकुमार की स्मृति पर भगवान् ने इतना गहरा आघात किया कि उसकी स्मृति का द्वार खुल गया। अतीत के गहरे में उतरकर उसने पंक में खड़े हाथी को देखा और दर्शन की श्रृंखला में यह भी देखा कि श्वेतहस्ती पैर को अधर में लटकाए खड़ा है। वह स्तब्ध रह गया। उसका मानस-तंत्र मौन, वाणी-तंत्र अवाक् और शरीर-तंत्र निश्चेष्ट हो गया। वह प्रस्तर--प्रतिमा की भांति स्थिर-शांत खड़ा रहा। दो क्षण तक सारा वातावरण नीरवता से भर गया। सब दिशाएं मौन के अतल में डूब गईं। सब कुछ शांत, प्रशांत और उपशांत। **(क्रमशः)**

# धर्म है उत्कृष्ट मंगल

**-आचार्यश्री महाश्रमण**

## तेरापथ में आचार्य पदारोहण : एक पर्यवेक्षण

विक्रम संवत् १९५४। तेरापंथ के षष्ठ आचार्य श्री माणकगणी का सुजानगढ़ (चूरू) में चातुर्मासिक प्रवास। आचार्यवर का तनुरत्न ज्वरग्रस्त हो गया। औषधोपचार किया गया, परन्तु कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। बीदासर से यति केवलचंदजी आए। उन्होंने आचार्यश्री की आकृति और नाड़ी को देखकर बताया कि शरीर की स्थिति चिंतनीय है, अतः करणीय कार्य में अब विलम्ब नहीं होना चाहिए।

यतिजी के उस निर्णय को सुनते ही सन्त सहम गए। यद्यपि उस समय आचार्यदेव युवा-अवस्था में थे, फिर भी स्थिति की गम्भीरता को समझकर कुछ अनुभवी साधुओं ने चिन्तन किया कि भावी व्यवस्था की ओर गुरुदेव का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है। मगन मुनि आदि कुछ सन्त गुरु-चरणों में पहुंचे, वंदना कर विनम्रता के स्वर में बोले-'प्रभो! आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर दीर्घकाल तक हमारा नेतृत्व करें-यही हमारी मनोकामना है! किन्तु गुरुदेव ! आपके स्वास्थ्य की दुर्बलता से हम सब चिंतित हैं। हमारा विनम्र निवेदन है कि आपको अब संघ का भावी प्रबन्ध कर देना चाहिए। युवाचार्य की प्रकट नियुक्ति का हमारा आग्रह नहीं है, आप भले उत्तराधिकारी का नाम पत्र में अंकित कर पूठे में रख लें।'

पूज्य श्री माणकगणी ने बातें को सुना पर मधुर उत्तर देकर उसे टाल दिया। इसका एक कारण यह था कि वे ज्योतिषी द्वारा लिखित अपनी जन्मकुण्डली की बातों पर विशेष विश्वास करते थे। उनमें से अनेक बातें पहले मिल चुकी थीं। इसलिए उन पर उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया था। जन्मकुण्डली के अनुसार उनका आयुष्य बासठ वर्ष का था। उस समय उनकी उम्र मात्र बयालीस वर्ष की थी। दूसरा कारण था कि ज्वर को उन्होंने साधारण ही समझा था। उन्हें कोई खतरा नहीं लग रहा था। इसलिए उनकी दृष्टि में वह भावी प्रबन्ध का उचित अवसर नहीं था।

आखिर वही हुआ जो होना था। कार्तिक कृष्णा तृतीया की रात्रि आई। घड़ी ग्यारह बजने की सूचना दे रही थी। पूज्यवर ने इस जीवन का अन्तिम श्वास ले लिया। उस समय आचार्यश्री का असामयिक वियोग जितना वेदनाकारक नहीं था, उतना वेदनाकारक संघ का संघपतिविहीन होना था। उद्यान के लिए माली की कितनी आवश्यकता हैं वैसे ही संघ के लिए संघपति की कितनी आवश्यकता। गणपतिविहीन गण में विघटन की घटना घट सकती है परन्तु मुझे गौरव है भैक्षव शासन के उन मुनिवरों पर जिन्होंने उस संकट के समय सूझ-बूझ से काम किया, संघनिष्ठा का परिचय दिया और संघहित के लिए निजी हितों को गौण किया।

सुजानगढ़ में उस समय चौदह साधु थे। चतुर्मास का लगभग एक महीना अवशेष था। साधुओं ने मिलकर विचार-विमर्श किया और निर्णय लिया कि भावी आचार्य के बारे में अभी कोई चिन्तन नहीं किया जाएगा। चतुर्मास के बाद सारा संघ एकत्रित होगा तभी इस प्रश्न को हल किया जाएगा। आचार्य के अभाव को स्थिति में तात्कालिक व्यवस्था की गई। तपस्वी भीमजी स्वामी को, जो कि वहां सब सन्तों में दीक्षा-वृद्ध थे, अग्रगण्य नियुक्त किया गया, 'आज्ञा आलोयणा' के लिए उनको अधिकृत किया गया। साथ ही साथ यह भी निश्चय हुआ कि चतुर्मास के पश्चात् ज्यों-ज्यों साधु एकत्रित होंगे, उनमें जो भी दीक्षा-वृद्ध होगा, उसी को अग्रगण्य समझा जाएगा। (दीक्षा वृद्ध का तात्पर्य संभवतः दीक्षावृद्ध अग्रणी मुनि है।)

चतुर्मास की समाप्ति के बाद तत्रस्थ श्रमणसंघ वहां से विहार कर लाडनूं आ गया। अन्य स्थानों से भी संत-सतियों के सिंघाड़े वहां आने लगे। मृगशिर महीने में प्रायः साधु-साध्वियां पहुंच गए। परन्तु संघ के महान् हितैषी, अनुभवी, विचारक, प्रभावशाली और आचार्यों द्वारा विशेष सम्मानित मुनि श्री कालूजी स्वामी (बड़े) अभी तक नहीं पहुंचे थे। उनकी प्रतीक्षा की जा रही थी। उनके आने की देरी ही भावी आचार्य के मनोनयन को देरी थी। पौष कृष्णा तृतीया को वे लाडनूं पहुंचे। उनके पहुंचते ही सारे संघ में उत्सुकता की एक लहर दौड़ गई। उन्होंने आते ही उसी दिन साधु-साध्वियों से बातचीत की। उदीयमान युवा संत मगन मुनि और कालू मुनि से विचार-विमर्श किया। जन-साधारण की भी भावना को समझा। वहां के वातावरण का अध्ययन करने के पश्चात् एकमात्र संघहित को दृष्टिगत रखकर उन्होंने गम्भीर चिन्तन किया। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् सब साधुओं की सभा आयोजित की गई। प्रारम्भ में शिष्टाचार की बातें चलीं। फिर मूल प्रश्न को सम्मुख लिया गया। कालूजी स्वामी ने साधुओं से कहा-सन्तों! मैं आप से संघपति की भिक्षा मांगता हूं। आप मुझे संघपति दें। सन्तों ने एक स्वर में कहा-हम तो आप से संघपति की मांग कर रहे हैं। यों कालूजी स्वामी और संतों के बीच मधुर मनुहारें होने लगीं। वहां का वातावरण प्रसन्न और सुखद बन गया। सबने मुनि कालूजी को आचार्य के चयन का भार सौंप दिया।

मुनिश्री ने उस अनुकूल वातावरण का समुचित लाभ उठाया। गम्भीर चिन्तन उनका पहले ही किया हुआ था। उन्होंने संघ, स्वामीजी तथा अन्य आचार्यों का गुणगान करते हुए कहा- 'हमारा शासन भगवान महावीर का शासन है। उसका संचालन करने के लिए आज हमें एक आचार्य की आवश्यकता है। भावी आचार्य के नाम की उद्घोषणा करने के लिए आप सबने मुझे जो यह भार दिया है, मैं उसके लिए अपना सौभाग्य मानता हूं। आप सबकी अनुमति का उपयोग करते हुए मैं संघ के सप्तम आचार्य के पद पर मुनिश्री डालचंदजी का नाम घोषित करता हूं।' इस घोषणा के साथ ही हर्ष ध्वनि हुई। सबने सनाथता का अनुभव किया। (क्रमशः)


## संघीय समाचारों का मुखपत्र

**तेरापंथ टाइम्स**
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

**समाचार प्रकाशन हेतु**
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

**अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्**


## अप्रैल 2026
### सप्ताह के विशेष दिन

**20 अप्रैल**
भगवान अभिनन्दन च्यवन कल्याणक

**23 अप्रैल**
भगवान धर्मनाथ च्यवन कल्याणक

**24 अप्रैल**
भगवान अभिनन्दन निर्वाण, भगवान सुमतिनाथ जन्म कल्याणक

**25 अप्रैल**
भगवान सुमतिनाथ दीक्षा कल्याणक

**26 अप्रैल**
भगवान महावीर केवलज्ञान कल्याणक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

# अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

## आदर्श के प्रतिमान थे ऋषभ देव

● डॉ. साध्वी सरलयशा ●

भौतिक और अध्यात्मिक उभय पथ को आलोकित करने वाले दिव्य पुरूष थे ऋषभ। उनसे जुडा. हुआ अक्षय तृतीया का त्योहार मानव मात्र के लिए प्रेरणा प्रदीप है। खुशियों का जनक है। जैन जगत के लिए आत्मोत्थान का अपूर्व संदेश हैं। इस अवसर्पिणी काल के मानव को उन्होंने कर्मशीलता, कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाया। अध्यात्मिक जगत को आत्म् शुद्धि के सर्वोच्च ग्राफ को छूने का जज्बा दिया। उनके जीवन का हर एक पायदान अपने आप में प्रेरणा पुंज है। उनकी विराट्ता को उजागर करने वाले कुछेक मानक निम्न हैं-

**संक्रमण काल में अवतरण :**

भौगलिक युग की परिसंपन्नता के समय ऋषभ का जन्म माता मरूदेवा की कुक्षि से हुआ। जन्म के समय दिव्य ध्वनि के साथ चौसठ इन्द्र, छप्पन दिक्कुमारियों ने मेरू पर्वत पर बालक का जन्मोत्सव मनाया। वो माता भी पुण्यशालिनी थी। जिसने किसी विशेष तप त्याग, संयम अथवा विकट परिषह को झेले बगैर मुनिश्री का वरण किया। इस अवसर्पिणी काल में प्रथम सिद्धा बनकर नारी जाति के गौरव को प्रतिष्ठित किया। उसमें उनकी उत्कृष्ट सरलता ऋजुता ही सहकार रही होगी। विकास से ह्रास के पल कितने चुनौतिपूर्ण होते हैं। यह किसी भी मिल मालिक या बड़ा इन्वेस्टमेंट करने वाले व्यक्ति का अनुभव हो सकता है। कुमार ऋषभ प्राकृतिक संपदा के ह्रास काल में पैदा हुआ। अब तक प्राकृतिक संसाधनों से जीवन की अपेक्षाएं पूर्ण करने के आदि लोगों ने पहली बार प्राकृतिक ह्रास का मंजर देखा। परस्पर छिना झपटी जैसा माहौल होने लगा। ऋषभदेव ने पैदा होने वाली हर स्थिति को अपने दिव्यदृष्टि से समाहित किया। चुनौतियों का सामना किया। और आने वाली पीढ़ियों को चुनोतियों से न घबराने का संदेश संप्रेषित किया।

**कुशल राजा :**

तत्कालीन समाज में पैदा होने वाली समस्या को अपनी पैनी दृष्टि से आंका। जनता की संतुष्टि के लिए समुचित समाधान खोजा। इसी खोज में असि, मसि, कृषि का प्रवर्तन हुआ। आम जनता को सरस जीवन शैली से जौड़ा। उनके श्रम के संदेश में कवि की पंक्तियां उजागर हुई-

आलस्य में जिए और अमृत भी पीए,
**तो जहर का पीना होता है।**
**जहां गिरता है मेहनत का पसीना,**
**वहां पत्थर भी नगीना होता है।।**

जनता ने ऋषभ को अपना मुखिया स्वीकार किया। कुशल नेता के बतौर अपनी पहचान बनाई। कुशल नेता वो होता है जो प्रजा के सुख-दुख में शरीक होता है। उसकी परेशानी को दूर करता है। राज ऋषभ एक जनप्रिय नेता कहलाए।

**परिवारिक दायित्व :**

परिवार के सौहार्दपूर्ण वातावरण के सृजन में अभिभावको की अहं भूमिका हो सकती है। इसका बोधपाठ ऋषभ देव ने अपने आचरण से दिया। उनके सौ पुत्र और दो पुत्रियां थी। ज्ञान-विज्ञान, कला, कौशल की दृष्टि से सभी को निपुण बनाया। अपनी संपति को पुत्रों के बीच समान रूप् से बंटवारा कर उन्होंने परिवार समाज में समरसत, सौहार्द और समता का सूत्रपात किया। पक्षपात प्रिय अप्रियता की संकरी पगडंडियों से अपरत होकर समान वितरण का वर्तन कर अभिभावक वर्ग को परिवारिक सौहार्द का मंत्र दिया।

**तिन्नाणं तारियाणं के राही :**

गृहस्थ बंधनों से मुक्त होकर संयम की राहें पर संन्यासी बने। उनके साथ चार हजार राजा महाराजा आदि भी दीक्षित हुए। प्रभुजी मौनी बन गए। चूंकि तीर्थकर आत्मा केवल्य उपलब्धि पर्यंत सघन साधना में लीन रहती है।

**प्रबल अन्तराय का उदय :**

इसी जीवन में बंधे अन्तराय कर्मों का उदय हुआ। प्रभु बिना आहार पानी एक वर्ष तक आर्य और अनार्य क्षेत्रों में गोचरी की गवेषणा करते हुए घूमते रहे। अंतराय टूटी। विहरण के क्रम में हस्तिनापुर पधारे। पूर्व रात्रि में श्रेयांस ने मेरू पर्वत को हाथों से सिंचने का स्वप्न देखा था। राजमार्ग से ऋषभ प्रभु को जाते हुए जैसे ही प्रपौत्र श्रेयांस कुमार ने देखा उसे जाति स्मृति ज्ञान हुआ। उसके भीतर सपने को साकार करने का भाव जगा। कृषक द्वारा भेंट यें आए इक्षुरस ग्रहण करने की प्रभु को भावना भाई। प्रभु ने अपनी अंजुली मांडते हुए इक्षुरस ग्रहण किया। प्रभु का पारणा हुआ।

**केवल्य का वरण :**

संयम के मार्ग पर अन्तर्मुखी बनकर प्रभु आत्म शुद्धि का विराट बल पैदा करने कठोर साधना में लग गए। न किसी से कोई वार्तालाप में कोई निर्देश बस आत्मा की मस्ती चित्र की प्रशांत वाहिता में रमण करने लगे। कवि की पंक्तियां साकार बनी-

**बहत्तर से बहत्तर की तलाश करो,**
**मिल जाए नदी तो सुमुद्र की तलाश करो।**
**टूट जाता है शीशा पत्थर की चोट से,**
**टूट जाए पत्थर उस शीशे के तलाश करो।।**

आत्मा की गहराई में डुबकियां लगाते प्रभु ने संयम पर्याय के एक हजार वर्ष पश्चात केवल ज्ञान पाया। केवल्य के पारदर्शी शीशे में चराचर जगत के समस्त भाव प्रकट हो गए। प्रभु की साधना कालीन अप्रमत्तता हर एक संन्यास्त मुमुक्षु के लिए प्राणवान प्रेरणा है। चूकि प्रभु में एक हजार वर्ष के छद्मस्थ काल में विभिन्न टुकड़ियों को मिलाकर मात्र एक दिन-रात 24 घंटे की नींद ली थी। अक्षय तृतीया पर्व पर प्रभु का स्मरण हमारे भीतर अप्रमतता की चेतना को जगाने वाला बने। जिज्ञासु अपनी मंजिल की दूरी को पारकर अभिप्सित का वरण करें। प्रभु की साधना हमारी आराधना बने।

## तप आत्मशोधन का मार्ग–अक्षय तृतीया पर्व

● मुनि मदन कुमार ●

अक्षय तृतीया तप की प्रेरणा का दिन है। इसके साथ आद्य तीर्थकर भगवान ऋषभ का संबंध जुड़ा हुआ है। भगवान ने दीक्षा ली और भिक्षाटन प्रारंभ किया। यह क्रम एक वर्ष साधिक चलता रहा। न भोजन और न पानी। अन्तराय कर्म का प्रबल योग था। जनता में भावना थी किन्तु भिक्षा विधि का बोध नहीं था। आखिर प्रपौत्र श्रेयांस कुमार ने जाति स्मरण ज्ञान से भगवान के भ्रमण का रहस्य जाना। उसके द्वारा प्रदत्त प्रासुक एषणीय इक्षु रस से भगवान के सहज तप का पारण हुआ। वह वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन अक्षय तृतीया के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

भगवान का तप और पारण दोनों ही आकर्षण के केन्द्र बन गये। भगवान जितना बल कहाँ से आये ? न वैसा संहनन और न वैसा सामर्थ्य। फिर भी महापुरुषों के अनुसरण की मनोवृत्ति ने एक नया रास्ता ढूंढ लिया। एक दिन भोजन और एक दिन उपवास का प्रकल्प निश्चित हो गया। इसे वर्षीतप कहा गया। हजारों तपः पूत व्यक्ति इस पथ पर चल पड़े। तप का एक नया मार्ग बन गया। महाजनो येन गतः स पंथाः के प्रतीक बने तपस्वी भाई-बहिन वर्षीतप का आलम्बन लेकर आत्म शोधन के मार्ग में चल रहे हैं। यह आध्यात्मिक अनुष्ठान चिरकाल से चल रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा।

तप उत्तम कार्य है। यह तीर्थकरों द्वारा प्ररूपित और प्रशंसित है। मोक्ष मार्ग चतुष्टयी संपन्न है जिसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप तथा दान, शील, तप एवं भावना का समावेश किया गया है। दोनों प्रकार के मार्ग तप से विभूषित हैं। इससे तप की विशेष महत्ता का बोध होता है। जैनागम में तप के दो प्रकार बतलाये गये हैं-बाह्य और आभ्यन्तर। इन दोनों के छः-छः प्रकार बतलाये हैं। ये सब कर्म निर्जरण के साधन हैं। इनके अनुशीलन से देहाध्यास छूटता है और आत्मा पवित्र होती है। बारह प्रकार के तप अनुष्ठान से आत्मोदय होता है। इनकी साधना नितान्त फलदायी है। जैसे-

- अनशन और अवमौदर्य से भूख और प्यास पर विजय पाने की ओर गति होती है। धृति और मनोबल का विकास होता है।
- भिक्षाचर्या और रस परित्याग से आहार की लालसा सीमित होती है तथा जिह्वा की लोलुपता मिटती है।
- कायक्लेश से सहिष्णुता का विकास होता है, देह में उत्पन्न दुःखों को सहने की मनोवृत्ति बनती है।
- प्रतिसंलीनता से आत्मा की सन्निधि में रहने का अभ्यास बढ़ता है।
- प्रायश्चित्त से अतिचार भीरूता और साधना के प्रति जागरूकता विकसित होती है।
- विनय से अभिमान मुक्ति और परस्परोपग्रह का विकास होता है।
- वैयावृत्त्य से सेवाभाव और सौहार्द पनपता है।
- स्वाध्याय से विकथा त्यक्त हो जाती है तथा एकाग्रता बढती है।
- ध्यान से एकाग्रता, एकाग्रता से मानसिक विकास एवं मन तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण पाने की क्षमता बढती है। संवेगों के नियमन का अभ्यास होता है।
- व्युत्सर्ग से शरीर, उपकरण आदि पर होने वाले ममत्व का विसर्जन होता है।

भगवान ने तप प्रयोग के लिये विशेष दिशा-दर्शन देते हुये कहा- इहलोक के निमित्त तप मत करो। परलोक के लिये तप मत करो। श्लाघा-प्रशंसा के लिये तप मत करो। केवल निर्जरा के लिये- आत्म-विशुद्धि के लिये तप करो। भगवान की दृष्टि में वही तप श्रेष्ठ है जो एक मात्र मोक्ष साधना की दृष्टि से किया जाता है। इसे सकाम तप माना गया है। महत्ता, गुणवत्ता और फलवत्ता की दृष्टि से सकाम तप ही उत्तम है एवं इसी का अनुशीलन करना चाहिये। भगवान ऋषभ तप के आदि पुरुष थे और वर्तमान में प्रचलित वर्षीतप की परंपरा उन्हीं के तप का अनुसरण कर रही है। भगवान के तप को पकड़ा गया है किन्तु आभ्यन्तर तप को उतनी गहराई से नहीं पकड़ा गया है। जितना बाह्य तप जरूरी है, उतना ही आन्तरिक तप जरूरी है। उपवास बाह्य तप है तथा शान्ति-मुक्ति, स्वाध्याय-ध्यान आन्तरिक तप है। केवल बाह्य तप का अनुशीलन वैसा ही है जैसा रोटी को छोड़कर मात्र शाक को खा लेना। भोजन की पूर्णता के लिये जैसे रोटी और सब्जी दोनों आवश्यक है वैसे ही तप की पूर्णता के लिये बाह्य और आभ्यन्तर दोनों ही तप आवश्यक है। तप को परिभाषित करते हुये आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने लिखा है- 'केवल आहार का वर्जन द्रव्य उपवास है और उसके साथ कषाय, कलह आदि का वर्जन तथा स्वाध्याय, ध्यान आदि का प्रयोग भाव उपवास है।' तप की परिपूर्णता की प्रेरणा देते हुये आचार्य श्री महाप्रज्ञजी कहते हैं-'धार्मिक व्यक्ति उपवास करता है और वह दिन भर सांसारिक क्रियाकलपों में उपवास के दिन को व्यतीत करता है तो वह उसका उपवास नहीं लंघन कहा जायेगा। उपवास करने वाला कम से कम तीन घंटा तो ध्यान, स्वाध्याय जप आदि में लगाये। होना तो यह चाहिये कि तपस्या का आधा समय इनमें लगे तब ही तपस्या की सार्थकता हो सकती है। तप का फलित होना चाहिये- कषाय शमन। इससे स्व और पर दोनों के लिये सुख की सृष्टि होती है तथा इहलोक और परलोक दोनों ही सुधरते हैं। तप आदि साधना का मूल उद्देश्य ही कषाय का शमन करना है। जहाँ यह नहीं होता वहाँ तप की शोभा पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। श्रीमज्जयाचार्य ने उपशम सुख को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए लिखा है- 'जो सुख देव, देवेन्द्र, चक्रवर्ती, सम्राट् आदि को प्राप्त नहीं होता है वह सुख वीतराग-साधक को प्राप्त होता है।' यह सुख कषाय के शमन से प्राप्त होता है। प्राकृत साहित्य में कषाय शमन की विधि बतलाते हुये लिखा है- यदि कोई व्यक्ति आवेश और आक्रोश करे तो साधक यह सोचे कि यह गाली गलौच कर रहा है किंतु यह मुझे पीट तो नहीं रहा है। कदाचित् कोई व्यक्ति पीटने के लिये आ जाये तो यह सोचे कि यह मुझे पीट रहा है। किंतु प्राण-हरण तो नहीं कर रहा है। कदाचित् कोई व्यक्ति मारने के लिये ही आ जाये तो यह सोचकर मन को संतुष्ट करे कि यह मुझे जान से मार रहा है किंतु यह मुझे धर्मभ्रष्ट तो नहीं कर रहा है। इस प्रकार साधक उत्तरोत्तर उन्नत और विधायक चिन्तन करता हुआ अपनी आत्मा को उपशम सुख में लीन रखे। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु की क्षमा-साधना जबर्दस्त प्रेरणा है। हम भी उनके पद चिह्नों पर चलने का संकल्प करें।

## अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

# अभिनंदन एक प्रकाश पुंज का अभिनंदन एक ज्ञान दीप का

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

**Best Mother and Best Son**

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयान्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुयमं जननी प्रसूता
सर्वा दिशो दुधति भानि सहस्त्ररश्मिं
प्राच्चेव दिग जनयति स्फुर दंशुजालम ।।

सैकड़ों स्त्रियां सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं पर किसी जननी ने आप जैसे पुत्र रत्न को पैदा नहीं किया। उस मां मरूदेवा का करोड़ पूर्व का आयुष्य था। जो यौगालिक युग में सर्वश्रेष्ठ नारी रत्न कहलाई। कुलकर नाभि एवं मरूदेवा जी के प्रांगण में 14 सपनों के साथ एक युगल का जन्म हुआ। जिसे ऋषभ सुमंगला आभिराम आभिधान मिला।

तीसरे आरे के अंतिम समय में एक वृक्ष के नीचे जिनका जन्म हुआ। इस दृष्टि से ट्री की तरह ऋषभ का जीवन दर्शन बहुआयामी स्वयं शीतलता दायक था। खुले आकाश में जन्म उनकी विशालता व्यापकता का परिचायक था। 14 सपनों के साथ Born Bright Futre का संकेत था।

**इक्ष्वाकु वंश-** काश्यप गोत्र, स्वर्ण वर्ण-वृषभ चिहन उनकी Golden Qulity के प्रतीक है।

**Best Rishabh and Best Performance**

उनकी प्रबल पुण्याई का प्रमाण है। उस समय किसी का Happy Birthday नहीं मनाया जाता था पर ऋषभ का Happy Birthday Celebaration Ceremony इन्द्र ने देव समूह के साथ सुमेरू पर्वत पर किया। इस समय शादी की परंपरा नही थी। युगल भाई-बहन पति-पत्नी के रूप में परिणत हो जाने पर ऋषभ की शादी सुमंगला एवं सुन्दा के साथ हुयी। उस समय एक टिव्नस होता पर ऋषभ के 100 पुत्र एवं दो पुत्रियां हुई। 10 कल्पवृक्षों से जीवन की समग्र आवश्यकताएं पूरी होती। धीरे-धीरे कलपवृक्षों से सब अपेक्षाएं पूरी नहीं हो रही थी, तब युगलों में संघर्ष विवाद विगृह का माहौल होने लगा। नाभि कुलकर ने विचार विमर्श के बाद एक नयी प्रणाली प्रारंभ की ऋषभ को राजा बनाया।

Best Prince Rishabh gave the best management, dicipline and culture to the your citization

कल्पसूत्र के अनुसार ऋषभ पहले राजा, पहले भिक्षु, पहले भिक्षाचर, पहले केवली, पहले तीर्थकर हुए।

राजा ऋषभ ने असी, मसि, कृषि की सुनियोजित व्यवस्था जन जीवन को सिखायी। उन्होंने शिल्पकला नैपुण्य आदि विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण दिया। ग्राम से नगर शहर की सभ्यता संस्कृति का संस्कार दिया। प्रभु के द्वारा शुभारंभ सृष्टि आज डिजिटल युग मीडिया टेक्नोलोजी के रूप में विकसित हो रही है।

एक बार कुछ किसान आदिम राजा के पास आए। बाबा आपके कहने से हमने बीज बोए। फसल तैयार हो गयी। धान सारा बैल खा जाते है तो हमारी मेहनत व्यर्थ चली जाती है। हम क्या करें हमारा मार्गदर्शन करें। ऋषभ ने कहा तुम बैलों के मुंह पर छींकी बांध दो। बैलों के मुह पर छींकी बांघकर किसानों ने अपना कार्य किया। फिर बैलों को खाद्य पेय दिया मगर बैल कुछ खा नहीं सके।

ऋषभ ने पूछा- तुमने वह छींकी खोली या नहीं। बाबा! आपने छींकी बांधने के लिए कहा मगर खोलने के लिए नहीं कहा। ऋषभ ने कहा बैलों की छींकी शीघ्रता से खोल दो। राजा ऋषभ के कहने से वह छींकी 12 घड़ी रही। अन्तराय कर्म के कारण ऋषभ को 12 महीने तक आहार पानी का योग नहीं मिला।

**Best Monk and Best Life**

जिनके चरण कमल में लक्ष्मी, नयन कमल में अमृत, कर कमल में आशीर्वाद, मुखकमल में प्रसन्नता हर वक्त रहती। जहां दुनिया पद पैसा प्रतिष्ठान परिवार पुत्र पुत्रियों के लिए दौड़ भाग करती है।

वहां प्रभु ऋषभ Peace Power, Patiene, Positinuty Project को पाने श्रामण्य के राजमार्ग पर बढ़ते रहे। उनमें एक ही राह, एक ही चाह एक ही तमन्ना थी।

अरमानों के आकाश को छूते हैं बुलंद हौसले।
यह बात किसी मस्त कलन्दर ने खेल दी।।
Life is a challenge- Meet it
Life is a Puzzle – of due it
Life is a Gift – Accept it

आध्यात्मिक अभ्युदय के लिए चार हजार राजाओं के साथ अयोध्या नगर के सिद्धार्थ वन में अशोक वृक्ष के नीचे तेले की तपस्या में भगवान ने लुंचन किया। इन्द्र के आग्रह से एक मुष्टि लुंचन नहीं किया। 83 लाख पूर्व भगवान राज्य व्यवस्था परिवार में रहे। एक लाख पूर्व श्रामण्य का अनुपालन किया।

समत्व चेता भिक्षाचरी के लिए भ्रमण कराते। भिक्षा विधि से अनजान लोग हीरे, पन्ने, सोने के आभूषण, हाथी, घोड़ा, रथ, बग्धी, पालकी आदि की मनुहार करते पर आहारदान से सभी अनभिज्ञ थे। श्रेयांस ने सपने में देखा मैं सुमेरू पर्वत को अमृत से सिंचन कर रहा हुं। क्या है सुमेरू! क्या है अमृत! ऋषभ प्रभु को देखा श्रेयांस को जाति स्मृति ज्ञान हो गया। 12 माह और 10 दिन की तपस्या का पारण भगवान ऋषभ के प्रपौत्र श्रेयांस राजा सोमप्रभ का पुत्र के द्वारा हस्तिनापुर में इक्षुरस के द्वारा हुआ। आकाश से पंच दिव्यों की वर्षा हुई। अहोदानं का खर मुखर हुआ। वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हजारों-हजारों नर-नारी ऋषभ के पदचिन्हों का अनुसार करते हुए प्रतिदिन उपवास नहीं कर सकते। पर एक दिन उपवास एक दिन पारण इस क्रम से वर्षीतप का पारण जैन तीर्थों में एवं आचार्यों के सान्निध्य में चारित्रात्माओं के पास करते है। वर्षीतप एक विशिष्ट परंपरा है। विभाव से स्वभाव की साधना है। आत्म कल्याण की आराधना है। अर्हम् अध्यात्म की उपासना है।

वर्षीतप जन-जन का तारणहारा है।
भवसागर से जीवन नैय्या का खेवनहारा है।
वर्षीतप करें मगर आडम्बर प्रदर्शन न करे।
सादगी संयम समता से आत्मरमण आत्मरंजन करे।

# आदिपुरुष : कला, कृषि और संस्कार के प्रथम गुरु

● साध्वी अमितरेखा ●

महापुरूषों का जन्म इतिहास का दस्तावेज बन जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्म खुले आकाश में हुआ, ऊपर छत नहीं होने की वजह से आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के हृदय में करूणा मैत्री उदारता एवं विशालता अत्यधिक थी। हम उससे आगे बढ़ते तो खुले आकाश में और भी महापुरूषों का जन्म हुआ होगा यह चिन्तन का विषय है। मैं आपका ध्यान बहुत अतीत में ले जाना चाहती हुं। सुषमा दुषमा नामक तीसरे आरे के 84 लाख पूर्व तीन वर्ष साढ़े आठ महीने अवशेष रहे। उस समय माता मरूदेवा ने एक युगल दान घरों का निर्माण नहीं था। प्रथम देवलोक में सौधर्मन्ड का आसन चलित हुआ। ज्ञान बल से देखा कुछ कम अठाराह करोड़ सैगर के बाद जम्बू दीप के दक्षिण भारत क्षेत्र में तीर्थकर बनने वाली आत्मा को अवतरण हो गया। छप्पन दिशा कुमरियों को निर्देश देते हुए कहा अविलम्ब सारी व्यवस्था करो। छप्पन दिशा कुमारियां माला मरुदेवां के पास आकर बोली आप हमारे से भयभीत न हो। एक विशाल सूतिका गृह की रचना कर एक योजना भूमि में संवर्तक वायु चलाकर कांटे पत्थर कचरे को दूर फेंका। मेघ की विकुर्वण के सुगन्धित जल की मंद-मंद वृष्टि कर धूलि को दबाया। पांच प्रकार के सुगन्धित पुष्पो की वर्ष कर पृथ्वी को सुशेभित किया। नाभिनाल को छेदन कर भूमि में गाड़ती हुई इस गड़ढे को रत्नों से भर देती है। कंदली गृह का निर्माण कर देव विमान जैसा से चौक और सिंहासन की व्यवस्था की। एक देवी ने तीर्थकर होने वाले शिशु को हाथ में लिया। दूसरी चतुर देवी माता मरूदेवा का हाथ पकड़कर सुगन्धित वस्त्रों शरीर को पौंछा गौशीर्ष चन्दन का विलेपन कर दिव्य वस्त्राभूषण पहनाए।

सौंधमैन्ड ने अपने पांच रूप बनाकर शिशु को मेरूपर्वत के पण्डक वन में ले जाकर विधिवत जन्मोत्सव मनाया। तत्पश्चात् माला मरूदेवा के पास सुलाकर छत में एक स्वर्ण एवं रत्नमय श्रीदामगण्ड गेंद को लटकाया। एक लटकती हुई रत्नों को माला जिसे प्रतिपल शिशु निहाराता रहे। दाएं अंगूठे की नाड़ी अमृतमय रस का संक्रमण किया। जिसको चूसने मात्र से क्षुधा शान्त हो जलाए। पांच देवियों की धाय माता के रूप में लालन पालन के लिए नियुक्त किया। बारह योजन लम्बी नौ योजन चौड़ी अयोध्या नगरी का निर्माण हुआ। नामकरण में समय में प्रस्ताव आया तीर्थकरों की माता चौदह स्वप्न देखती, उसमें मरूदेवा ने प्रथम स्वप्न वृषभ का देखा तनदुरुप् बालक का वृवभ नाम रखा। कालान्तर में वृषभ के स्थान पर ऋषभ हो गया। जब शिशु का जन्म दिवस आया सौघमेन्द्र ने चिन्तन किया। प्रथम जिनेश्वर का जन्म हुआ। एक वर्ष बीत गया। किन्तु अभी तक वंश की स्थापना नहीं हुई। इन्द्र जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर उपहार स्वरूप अनेक पदार्थ थाल में लेकर आए। उस समय शिशु नाभि के गोद में थे। इन्द्र ने उपहार का थाल शिशु ऋषभ के सामने किया। शिशु ऋषभ ने थाल से गन्ने का पीस उठाया। इन्द्र ने उसी क्षण इच्छाकुवंश की स्थापना की। कुछ कम छ लाख पूर्व बीतने के बाद भरत का जन्म हुआ और समय कर्मभूमि में परिवर्तन हो गया। अनेक समस्याएं पनप रही थी। एक बार कुछ योगलियक ऋषभ के पास बैठे बाते कर रहे थे। हमारी समस्या का समाधना होगा वरना लड़ते लड़ते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाऐगे। ऋषभ ने कहा अब हमें राजा की जरूरत है, यौगोलिक बोले राजा कौन होता है। ऋषभ ने राजा के बारे में कुछ जानकारी दे दी। यौगोलिक बोले तब तो आप ही राजा बने। ऋषभ ने समझाया और कहा वर्तमान में हमारे नेता कुलकर नाभि है, उनके पास जाओ । राजा की मांग करो। भोले भाले यौगलिक नाभि के पास गए-आप अब हमे नये राजा नेता के रूप में दो। क्योकि कुलकर व्यवस्था अब निष्प्रभावी हो गई है। नाभि कुलकर ने कहा ऋषभ को ही राज बना दो, योगलिक मिलकर विनम्रता पूर्वक राज्यभिषेक करने लगे। अत्यधिक विनम्रता करने लगे यौगलिको की विनम्रता देख सौघमैन्द्र ने अयोध्या नगरी का दूसरा नाम विनिता नगरी रखा .त्रेसठ लाख पूर्व वर्ष राज्य का कुशल संचालन कर उसमें असि, मसि, कृषि तथा अनेक कलाओं का प्रशिक्षण तथा विद्या सिखा कर जब एक लाख वर्ष पूर्व जीवन अवशेष रहा उस समय चार हजार राजा आदि के संयम स्वीकार किया।

एक वर्ष चालीस दिन बाद प्रथम पारण हस्तिनापुर में प्रपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथ से इक्षु रस से किया। अक्षय तृतीया तब से प्रारम्भ हुई। एक हजार वर्ष की ध्यान साधना के बाद कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। माता मरूदेवा ने महाप्रभु के अनुपम ठाठ बाट को देखा चिन्तन करते करते भावों की उत्कर्षता में माध्यम से सर्व प्रथम सिद्धालय में विराजमान हो गई। मातृऋण से भगवान उऋण बन गये। प्रवचन के बाद भरत के 500 पुत्र 700 पौत्रों ने दीक्षा स्वीकार की। ब्राह्मी प्रभु के चरणों में समर्पित होकर साधना करने लगी। बाद में 99वें पुत्र तथा सुन्दरी भी दीक्षित हो गई। भगवान ऋषभ का अधिकांश परिवार संयमपथ आरूढ होकर साधना करने लगे ।

प्रश्न होता है। मां स्वयं, पुत्र, पुत्रियां दीक्षा लेकर सिद्ध गति को प्राप्त हुए। फिर नभि कुलकर वर्तमान कहां है। एक शाश्वत नियम होता है। करोड़ पूर्व वर्ष की आत्मा उसी भव में मोक्ष जा सकते हैं। किन्तु एक से अधिक आयु वाला योगलिक उस भव में मोक्ष नहीं जा सकता। नाभि कुलकर अपना आयुष्य पूर्ण कर भवनपति देवों में नाग कुमार देव बने। दस हजार वर्ष की आयु स्थिति को भोग कर भगवान ऋषभ के युग में जन्म उतम कुल में लेकर संयम स्वीकार किया, संयम की उत्कृष्ट आराधना करते हुए सिद्धालय में विराजमान हुए।

धन्य है महाप्रभु ऋषभ् का परिवार माता पिता सौ पुत्र दोनों पुत्रियां अनेक प्रपौत्र आदि कर्मरज से निर्मल होकर लोक के अग्र भाग में सिद्ध भगवान के रूप प्रतिष्ठित हो गए। भगवान ऋषभ ने अपनी दीर्घ कालिक तपस्या का पारणा इक्षुरस से वैशाख शुक्ला तृतीया को किया। इस उपलक्ष में प्रतिवर्ष हजारों भाई बहिन तप के रूप में वर्षीतप के साधना करते हैं। तपस्या करने वालों के प्रति अनन्त अनन्त शुभकामना एवं अनुमोदना।

# 2625वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

## विलेपार्ले, मुंबई

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2625वां जन्म कल्याणक (महावीर जयंती) आज विलेपार्ले में आध्यात्मिक ऊर्जा और अपार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी (ठाणा-4) के पावन सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी राकेश कुमारी जी के मुखारविंद से नवकार मंत्र के पावन उच्चारण के साथ हुई। इसके पश्चात विलेपार्ले महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर समारोह का विधिवत शुभारंभ किया। सभा को संबोधित करते हुए साध्वी श्री राकेश कुमारी जी ने वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा आज जब विश्व भयंकर युद्धों की विभीषिका झेल रहा है, तब भगवान महावीर का अनेकांतवाद और अहिंसा का सिद्धांत ही एकमात्र समाधान है। यदि राष्ट्र इन सिद्धांतों को अपना लें, तो वैश्विक संघर्षों पर विराम लग सकता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि महावीर को केवल पूजने से काम नहीं चलेगा, बल्कि स्वयं 'महावीर' बनकर ही उनके मर्म को समझा जा सकता है। साध्वी मलयविभा जी ने भगवान महावीर के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उन्हें 'करुणा का सागर' बताया। उन्होंने विस्तार से समझाया कि कैसे प्रभु के आदर्श आज के युग में भी प्रासंगिक हैं। पूर्व अध्यक्षा शशि लोढ़ा ने एक मधुर गीत के माध्यम से संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय कर दिया।

उपासक तरुण गुंदेचा और दीपक डागलिया ने भी अपने श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किए। साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी मलयविभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चैतस्वी प्रभा जी की सामूहिक स्वर लहरियों ने उपस्थित जनसमूह को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन साध्वी विपुलयशा जी ने अपनी चिरपरिचित कुशलता के साथ किया।

## बालोतरा

2625वाँ भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। राजेश बाफना ने बताया आज 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक दिवस पर नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। उपासक मांगीलाल सिंघवी ने कहा कि इस अवसर्पणी काल के पूर्व में यानि 2624वर्ष पहले आज ही के दिन भगवान महावीर का जन्म हुआ था जिसको हम जन्मकल्याणक नाम से मना रहे हैं। उनका जन्म क्षत्रिय कुंडलपुर गांव (बिहार) में हुआ था, और उनके बचपन का नाम वर्धमान था। उपासक मनोज ओस्तवाल ने बताया भगवान महावीर विलक्षण प्रतिभा पुरुष थे उन्होंने अपने साधना काल में कई कष्ट को सरलता समर्पण ओर ध्यान तप से सहन किए।महावीर ने स्वयं को जीतने (क्रोध, लोभ, मोह पर विजय) को ही सच्चा वीर माना ओर सिद्ध मुक्त बने। इसके साथ मनोज जी ने करीब आधा घंटा ध्यान कायोत्सर्ग एवं सांस की क्रिया करवाई । ओर धारणानुसार त्याग संकल्प करने का कहा। इस जन्मकल्याणक महोत्सव पर सभा अध्यक्ष महेंद्र वैद ने अपने विचार रखते हुए भगवान महावीर स्वामी द्वारा बताए सिद्धांतों को अपनाकर उस पर अनुसरण करने का कहा ओर सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव रहे।

## नरसिंहपुर

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी के सानिध्य में भगवान महावीर की २६२५ वी जन्म जयंति नरसिंहपुर में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के द्वारा महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वी श्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा भगवान महावीर अहिंसा के अवतारी थे, सत्य के पुजारी थे, समता के महासागर थे। वे क्षमाशूर थे, परीषहजयी थे। संसार में दो तरह के शूर होते हैं– युद्धशूर और क्षमाशूर। युद्धशूर शत्रुओं को जीतता है, क्षमाशूर शत्रुता के भाव को जीतता है, अपने आप को जीतता है। युद्धशूर दूसरों को जीतता है क्षमाशूर अपने आप को जीतता है। भगवान महावीर ने तिन्नाणं तारयाणं की साधना की। भगवान महावीर हमारे लिए आदर्श हैं। उनके सिद्धान्त बड़े प्रासंगिक है। विश्व में तीन प्रकार की समस्या है- विश्व मैत्री का अभाव, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का अभाव, मानवीय विषमताएं। तीनों समस्याओं का समाधान भगवान महावीर की वाणी में है। पहली समस्या का समाधान भगवान ने दिया - मित्ती में सव्वभूएसु। । दूसरी समस्या का समाधान भगवान ने दिया- अनेकान्तवाद। तीसरी समस्या का समाधान भगवान ने दिया- सब जीवों की आत्मा समान है, किसी को छोटा, बड़ा मत मानो। भगवान ने नारी को भी पुरुष के समान अधिकार दिए। हम भगवान महावीर के सिद्धांतों को समझें और अपने जीवन में उतारें। भगवान महावीर जन्म से ही मैत्री, प्रेम, करुणा के संस्कार लेकर आये थे। वे जन्म से ही शक्ति के अजस्र स्रोत थे। अहिंसक चेतना के साथ भगवान महावीर का जन्म हुआ। आज के दिन आचार्य भिक्षु की तेरस भी है। इस अवसर पर साध्वी वर्धमानयशाजीने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन गौतम पीतलिया ने किया । कार्यक्रम का संचालन साध्वी बोधिप्रभा जी ने किया।

## कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 2625 वाँ भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता द्वारा महासभा भवन में हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता के अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा- भगवान महावीर भारतीय संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। वे महायोगी, महात्यागी, महातपस्वी महामनस्वी महातेजस्वी महायशस्वी व महाप्रभावक थे। उनकी उज्ज्वलतम साधना सम्पूर्ण दीप्ति के साथ आज भी उद्भाषित हो रही है। वे अतीन्द्रिय चेतना के धनी थे। उनको ग्रंथों व पंथों में न खोजकर स्वयं में खोजने का प्रयत्न करे। उन्होंने आगे कहा- जो दूसरों को जीतता है वह वीर होता है और जो अपने आप को जीतता है वह महावीर होता है। भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को मध्यरात्रि में हुआ। उनकी माता त्रिशला व पिता सिद्धार्थ थे। उनको जीवन में लागू किया जाये ते अनेक समस्याओं का समाधान संभव है।

भगवान महावीर में मातृभक्ति, मातृप्रेम, करुणा, निरभिमानता व सहनशीलता विशिष्ट थी। उनका जीवन सभी के लिए आदर्श प्रेरणा है। महावीर जयंती के अवसर पर सभी के प्रति आध्यामिक शुभकामनाएं देता हूँ । मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, मध्य कोलकाता के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली ने दिया। इस अवसर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कोलकाता जनरल के अध्यक्ष प्रतीक हुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन कलकत्ता सभा के मंत्री उम्मेद जी नाहटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## बीकानेर

जैन महासभा बीकानेर द्वारा भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव 2026 हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में उद्बोधन देते हुए आचार्य श्री महाश्रमण के शिष्य मुनि अमृत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने इस धरा पर जन्म लेकर आलोकित कर दिया। उन्होंने कि हमारा जैन मंत्र नवकार भी जैन एकता का प्रतीक है। हमारी सामायिक, नवकार, मंगलपाठ, तपस्या सभी एकता की प्रतीक है। बीकानेर जैन महासभा के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि 21 व्यंजन सीमा अभियान से प्रत्येक परिवार को जुड़ना चाहिए। जैन महासभा बीकानेर के जैन समाज के लिए मुख्या, मातृत्व, पितृत्व के रूप में अपना दायित्व निभा रही है। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मुनि उपशम कुमार ने भगवान महावीर स्वामी के 27 भवों का वर्णन करते हुए कहा कि कषायों पर विजय पाना जररूरी है।। कषायों को दूर करने से ही परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति मिल सकती है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या साध्वी रश्मि प्रभाजी ने आत्मा भिन्न है शरीर भिन्न है कि एक माला जपते हुए ध्यान के द्वारा अनुभव करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि ऐसा एक वर्ष लगातार करने से आप अपने आप में हुवे परिवर्तन को स्वयं अनुभव कर सकते हैं। साध्वी श्री जी ने गीतिका के माध्यम से भगवान महावीर के गुणों का गुणगान किया। आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि भगवान का जन्म दिन अहिंसा, करूणा ओर मैत्री का जन्म दिन है। भगवान महावीर को एक दिन नही प्रति दिन याद रखे। उन्हें भुले नही। उनके बताऐं मार्ग पर चले। समाज में ओर अधिक एकता बढे। तपागच्छ से अमित गुणाश्री जी ने गीतिका का संगान किया। तथा भगवान के पांच कल्याणक के बारे में बताया। तपागच्छ से साध्वी अर्चित गुणा श्री जी ने कहा की कषाय दूर हो जाने से कैवल्य ज्ञान होता है। कार्यक्रम में जैन महासभा के अध्यक्ष कन्हैयालाल बोथरा ने सभी का स्वागत किया।मुख्य अतिथि गौरव बोथरा IAS, का परिचय महासभा के सह मंत्री मनीष नाहटा ने दिया। मुख्य अतिथि गौरव जी भगवान महावीर के अनेकान्तवाद दर्शन को विश्व की समस्त समस्याओं के हल का रास्ता बताया। आभार ज्ञापन महासभा के उपाध्यक्ष संजय सांड ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन महासभा के महामंत्री जैन जतनलाल संचेती ने किया।

## गुड़ियात्तम

महावीर जयंती के पावन अवसर पर स्थानीय तेरापंथ सभा एवं सकल जैन संघ के तत्वावधान में मिठाई वितरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जैन समाज के सभी प्रमुख पदाधिकारी, सदस्य एवं श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

## कांदिवली, मुंबई

शासनश्री साध्वी श्री विद्यावतीजी ऽद्वितीयऽ के सान्निध्य में महावीर जयंती का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारित करने के बाद तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए भगवान महावीर पर विचार व्यक्त किये। शासनश्री साध्वी विद्यावतीजी ने कहा- ऽजैन धर्म जन-जन का धर्म है। भगवान महावीर का अहिंसा का संदेश संपूर्ण मानव जाति के लिए आदरणीय, आचरणीय एवं अनुकरणीय है।

अहिंसा के उपदेश में अभय, सहिष्णुता मैत्री एवं करुणा का स्वतः ही समावेश हो जाता हैऽ। साध्वी प्रियंवदा जी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा- आज के दिन महावीर के उपदेशों को समझकर स्वकल्याण के साथ परकल्याण करने का भी प्रयास करें, महावीर ने कहा था कि संपूर्ण मानव जाति एक है। किसी को दुःख न देना, क्लेश न करना, मन को पीडित न करना अहिंसा का राजमार्ग है। साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी ने पत्रकार के रूप में उपस्थित सीमा कोठारी, अल्का पटावरी एवं जीनल धाकड़ की जिज्ञासाओं को इंटरव्यू के रूप में समाहित किया। तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली ने महावीर काव्य धारा की सुंदर प्रस्तुति दी। कांदिवली सभा अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी, मालाड़ सभा अध्यक्ष गणेशलाल कोठार आदि की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रियंवदा जी ने कुशलता पूर्वक किया। आभार ज्ञापन कांदिवली तेयुप मंत्री भावेश चोरड़िया ने किया।

# देश विदेश में गूंजी अणुव्रत की गूंज

**जोधपुर।**

अणुव्रत लेखक मंच द्वारा आयोजित संगोष्ठी का विषय अत्यंत समसामयिक, समन्वित एवं प्रेरणादायी रहा।

इस अवसर पर विभिन्न पर्वों—नव विक्रम संवत्सर, चैत्र नवरात्रि, महावीर जयंती, आचार्य श्री भिक्षु अभिनिश्रक्रमण,रामनवमी तथा ईद-उल-फितर—के माध्यम से भारतीय संस्कृति में निहित नैतिक मूल्यों, आत्मसंयम , पर्यावरण और अहिंसा के संदेश को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत संगान एवं अणुव्रत आचार संहिता वाचन से हुआ। अणुव्रत विश्व भारती अध्यक्ष प्रताप सिंह दूगड़ ने कार्यक्रम मे उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए , साहित्यकारों से लेखनी के माध्यम से जन जन मे अहिंसा भावना को प्रसारित करने का अनुरोध किया। जिनेन्द्र कुमार कोठारी संयोजक अणुव्रत लेखक मंच ने मंच के उद्देश्य—मानव जीवन में नैतिकता, संयम और सद्भावना के प्रसार—को रेखांकित किया।

वक्ताओं ने अपने उद्बोधनों में विभिन्न पर्वों की आध्यात्मिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। नव विक्रम संवत्सर को नव आरंभ, नव संकल्प और सकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक बताते हुए कहा गया कि यह समय आत्ममंथन एवं जीवन में नई दिशा निर्धारित करने का अवसर प्रदान करता है। चैत्र नवरात्रि को आत्मशुद्धि, साधना और आंतरिक शक्ति जागरण का पर्व बताया गया, जो व्यक्ति को आत्मसंयम और अनुशासन की ओर प्रेरित करता है। महावीर जयंती के संदर्भ में भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य के सिद्धांतों को वर्तमान युग में अत्यंत प्रासंगिक बताया गया।

उपसंहार वक्तव्य प्रभारी उपाध्यक्ष डॉ कुसुम लुनिया ने एवं आभार वक्तव्य संतोष कुमार सुराणा सह संयोजक अणुव्रत लेखक मंच ने किया।

# "फिट युवा-हिट युवा" संगोष्ठी का आयोजन

**निर्माण नगर, जयपुर।**

तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर द्वारा "फिट युवा - हिट युवा" अभियान के अंतर्गत में संगोष्ठी का आयोजन निर्माण नगर किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में स्वास्थ्य, फिटनेस एवं टीम स्पिरिट को बढ़ावा देना था। सुनहरी धूप में में युवाओं ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास, एवं प्राणायाम किया।

सभी ने स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा नियमित व्यायाम करने का संकल्प लिया। योग के पश्चात "चाय पर चर्चा" का आयोजन हुआ, जिसमें तेयुप जयपुर अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने युवाओं को शारीरिक, मानसिक एवं संगठनात्मक रूप से सशक्त बनने के लिए प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक रजत संचेती का विशेष योगदान रहा।

## पृष्ठ 1 का शेष

**दो युगों के दो महापुरुष...**

**संयोग :** दोनों की माताओं ने सिंह का स्वप्न देखा था और दोनों का महाप्रयाण जीवन के आठवें दशक में चातुर्मास के दौरान हुआ।

**वैश्विक युद्ध संकट पर चिंता:** वर्तमान वैश्विक हालातों और युद्ध की विभीषिका पर आचार्यश्री ने कहा, ₹आज दुनिया में हर जगह अशांति और हिंसा का माहौल है।

भगवान महावीर का अहिंसा का सिद्धांत केवल जैन समाज के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए है। विकास के लिए शांति अनिवार्य है। यदि राष्ट्राध्यक्ष अहिंसात्मक चिंतन को अपनाएं, तो ही हिंसा पर विराम लग सकता है।

**आध्यात्मिक उद्बोधन और प्रस्तुतियां :**

कार्यक्रम का आरंभ मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वी वर्या संबुद्धयशाजी ने महावीर के 'आत्म कर्तृत्ववाद' की व्याख्या की, वहीं साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने उनके जीवन को कथनी और करनी का मूर्त रूप बताया। मुख्य मुनि महावीर कुमारजी एवं साध्वी वृंद ने गीतों के माध्यम से भावांजलि अर्पित की। इस अवसर पर आचार्य शिवमुनि जी की शिष्या साध्वी पीयूष दर्शन ने भी अपने विचार रखे।

**प्रमुख घोषणाएं :**

आचार्यश्री ने इस अवसर पर घोषणा की कि वर्तमान में समणी वृंद और मुमुक्षु लाडनूं से बाहर नहीं भेजे जाएंगे।

उन्होंने श्रावकों को आहार शुद्धि पर विशेष ध्यान देने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद एवं महिला मंडल ने भी अपनी सहभागिता दर्ज की।

### महावीर और भिक्षु में अनेक समानताएं

| समानता के बिंदु | विवरण |
|---|---|
| जन्म तिथि | दोनों का जन्म शुक्ला त्रयोदशी को हुआ। |
| पारिवारिक जीवन | दोनों का विवाह हुआ और दोनों की एक-एक पुत्री थी। |
| स्वप्न | दोनों की माताओं ने सिंह का स्वप्न देखा था। |
| स्थापना | महावीर तीर्थ के प्रवर्तक (आदिकर) थे, तो आचार्य भिक्षु तेरापंथ के आदिकर। |
| जीवनकाल | दोनों का महाप्रस्थान जीवन के आठवें दशक में हुआ। |
| निर्वाण समय | दोनों का महाप्रयाण चातुर्मास काल के दौरान हुआ। |

# बोलती किताब

## मैं मेरा मन मेरी शान्ति

मानव जीवन की मूल संरचना में प्यास एक शाश्वत सत्य की तरह विद्यमान है। जल उस शारीरिक प्यास का समाधान तो दे देता है, किन्तु मनुष्य की वास्तविक व्याकुलता इससे कहीं अधिक गहन है। कंठ में उठने वाली प्यास समाप्त हो सकती है, परंतु अंतर्मन की प्यास शांति के विराट स्रोत की खोज में भटकती रहती है। इसी आंतरिक प्यास की तृप्ति मानव चेतना का सबसे बड़ा प्रश्न है।

आज की भौतिक उन्नति, संसाधनों की प्रचुरता और सुविधाओं की बहुलता के बावजूद मनुष्य असंतोष से घिरा हुआ है। साधन संग्रहित हो गए, पर अनुभूति का महास्रोत अब भी दुर्लभ है। शांति का अर्थ निष्क्रियता नहीं, बल्कि चेतना की सक्रिय परिपक्वता है। जब मन स्वयं में विलीन होता है और चैतन्य अपनी लौ से अपने को ही प्रकाशित करता है, तब शांति का वास्तविक अनुभव संभव होता है।

समाज के बदलते परिवेश में हिंसा, तनाव, प्रतिस्पर्धा और अस्तित्व-संघर्ष ने मानसिक दबावों को बढ़ाया है। ऐसे समय में आंतरिक शांति का प्रश्न केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि सामाजिक आवश्यकता भी है। शांति का अभाव मनुष्य के हर कदम को कांटों से भरे पथ में बदल देता है, जबकि उसके अनुभव का विस्तार सुख और तृप्ति के नीलोत्पल को जीवन में खिलाता है।

इस पुस्तक के माध्यम से पाठक संघ के सिद्धांतों और अनुशासन की रीढ़ मर्यादा प्रणाली के वास्तविक उद्देश्य को समझ सकेंगे। श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मूल्य-निष्ठ चिंतन के साथ यह कृति मानव समाज में संयम, अहिंसा, और अनुशासन की भावना को जागृत करने में सक्षम है। यह केवल तेरापंथ का इतिहास नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरक दृष्टि है, जो वर्तमान समय के सामाजिक, धार्मिक और नैतिक संकटों के बीच मार्गदर्शन का कार्य कर सकती है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

**आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती**

+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

# आदिसागर अंकलीकर विद्वत् सम्मान से सम्मानित

**लाडनूं।**

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूं के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के प्रो. जिनेन्द्र जैन को जैनविद्या, प्राकृत भाषा के विकास, पांडुलिपि संरक्षण एवं उत्कृष्ट लेखन कार्य व साहित्य संपादन के लिए आदिसागर अंकलीकर विद्वत् सम्मान-2025' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें श्री आदिसागर अंकलीकर परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य प्राकृताचार्य श्री सुनील सागर महामुनिराज के सान्निध्य में प्रदान किया गया। बड़ोदरा (गुजरात) में आदिसागर अंकलीकर जागृति मंच मुम्बई उन्हें यह सम्मान तीर्थंकर श्री अजितनाथ के पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप प्रो. जैन को श्रीफल, शॉल, प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र और 51 हजार रूपयों की नगद राशि प्रदान की गई।

गौरतलब है कि आदिसागर अंकलीकर विद्वत् सम्मान, आचार्य आदिसागर अंकलीकर अंतरराष्ट्रीय जागृति मंच द्वारा दिगंबर जैन विद्वानों को प्रदान किया जाने वाला एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है।

यह सम्मान जैन सिद्धांतों, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

# आत्मा शाश्वत है, कर्मों को भोगे बिना नहीं मिलता छुटकारा : आचार्यश्री महाश्रमण

## लाडनूँ की सुधर्मा सभा में गूंजा आत्मवाद का सिद्धांत, विकास महोत्सव पर दो मुमुक्षु बनेंगे जैन मुनि और साध्वी

लाडनूं।
6 अप्रैल, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन विश्व भारती की 'सुधर्मा सभा' में अध्यात्म और दर्शन की अमृत वर्षा की। 'कर्म से छुटकारा कब?' विषय पर सारगर्भित मंगल प्रवचन फरमाते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि कर्मवाद को समझ लेने से मनुष्य के चित्त में शांति आ सकती है।

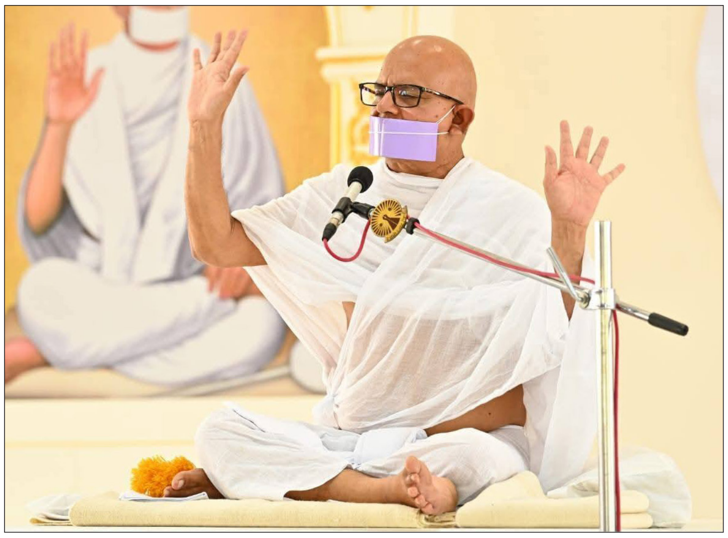

**आत्मा शाश्वत और अखंड है:**

आचार्य प्रवर ने जैन दर्शन के 'आत्मवाद' सिद्धांत की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आत्मा और शरीर दो पृथक तत्व हैं। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया: ₹आत्मा शाश्वत है; यह हमेशा थी, है और रहेगी। प्रत्येक आत्मा असंख्य प्रदेशों का एक अखंड पिंड है, जिससे न तो कोई प्रदेश अलग हो सकता है और न ही जुड़ सकता है। आत्मा अछेद्य और अभेद्य है।₹

**नव तत्त्व: आत्मा और कर्म का संबंध :**

आचार्यश्री ने फरमाया कि जीव और अजीव के साथ जब कर्म जुड़ते हैं, तो 'नव तत्त्वों' का निर्माण होता है। उन्होंने इन तत्त्वों को कर्म की प्रक्रिया से जोड़ते हुए समझाया:

**पुण्य-पाप:** कर्मों का शुभ और अशुभ फल।

आश्रव-संवर: कर्मों के आने का मार्ग और उन्हें रोकने की प्रक्रिया।

> कर्मों के वेदन और निर्जरा से ही संभव है मुक्ति
> -आचार्यश्री महाश्रमण

**निर्जरा:** कर्मों को आत्मा से पृथक करना।

**बंध-मोक्ष:** कर्मों का बंधन और उनसे पूर्ण स्वतंत्रता।

**समता से सहें कर्मों का उदय:**

जीवन के विश्लेषण पर जोर देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि हमारे जीवन की वर्तमान परिस्थितियाँ कर्मों के उदय और विलय का प्रतिबिंब हैं। आचार्य श्री ने संदेश दिया कि शास्त्रानुसार बंधे हुए कर्मों को भोगे बिना छुटकारा नहीं मिलता। अतः जीवन में आने वाली किसी भी कठिनाई को कर्मों का योग समझकर शांति और समता से सहन करना चाहिए। कर्मों के वेदन (भोगने) और निर्जरा (तप) द्वारा ही मुक्ति संभव है।

**विशेष घोषणा : २० सितम्बर को होगी मुनि व साध्वी दीक्षा :**

प्रवचन के उपरांत आध्यात्मिक उत्साह के बीच आचार्यश्री ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। मुमुक्षु बाबूलाल बाफना एवं मुमुक्षु सुमन बाई द्वारा दीक्षा हेतु की गई प्रार्थना को स्वीकार करते हुए आचार्य प्रवर ने उन्हें संयम पथ पर अग्रसर करने की अनुमति प्रदान की। दीक्षा तिथि: २० सितम्बर २०२६ (भाद्रव शुक्ला नवमी) विकास महोत्सव के पवन अवसर पर होने जा रहे दीक्षा महोत्सव घोषणा से संपूर्ण सुधर्मा सभा 'ॐ अर्हम' के नारों से गुंजायमान हो उठी। कार्यक्रम के अंत में आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

# पाप कर्मों के उदय काल में बंधु भी छोड़ देते हैं साथ : आचार्यश्री महाश्रमण

## बंधुता की सीमा : जहाँ स्वार्थ खत्म, वहाँ साथ खत्म

लाडनूं।
7 अप्रैल, 2026

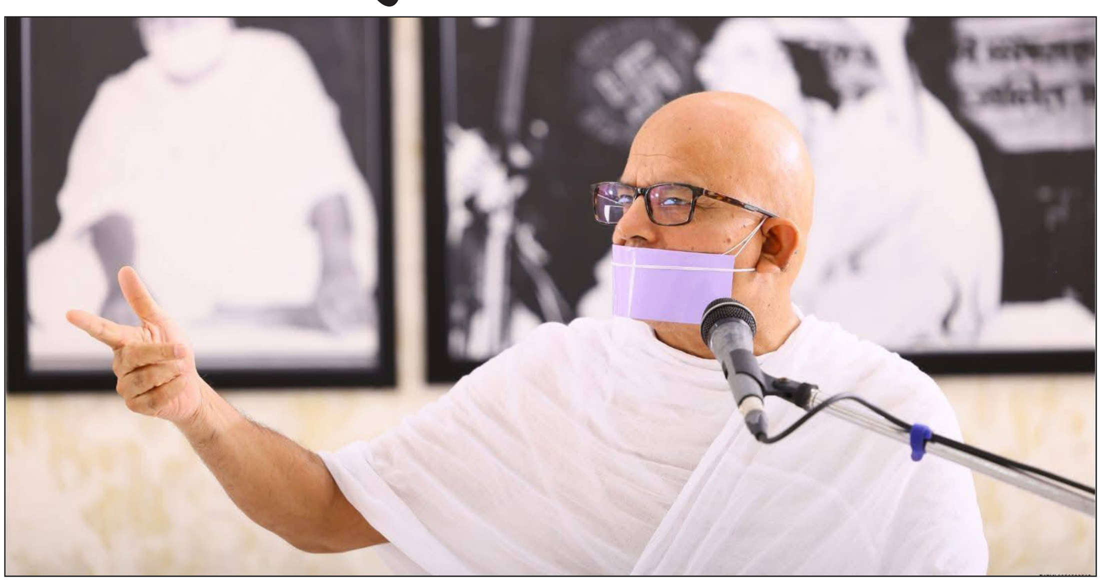

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रवास स्थल पर आयोजित सुधर्मा सभा में श्रावकों को संबोधित किया। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आचार्य प्रवर के स्वास्थ्य या किन्हीं अपरिहार्य कारणों से सुधर्मा सभा स्थल के बजाय उनके प्रवास स्थल पर ही संपादित हुआ।

**कर्मवाद का फल अटल :**

'बंधुजन का असहयोग' विषय पर पावन देशना देते हुए शांतिदूत आचार्य श्री ने फरमाया कि धर्म एक महान तत्त्व है और धार्मिक जगत का सबसे बड़ा सिद्धांत कर्मवाद है। उन्होंने स्पष्ट किया कि कर्म उसी को फल देता है जिसने वह कर्म किया है। कर्ता का कर्म सदैव उसके पीछे चलता है।

**स्वार्थ और संसार का यथार्थ :**

आचार्य श्री ने मर्मस्पर्शी बात कहते हुए फरमाया कि— ₹संसार में व्यक्ति अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कभी-कभी चोरी, लूटपाट और हिंसा जैसे पाप कर्म कर बैठता है। लेकिन जब उन पाप कर्मों के वेदन (फल भोगने) का काल आता है, तब वे बंधु-जन जिनके लिए पाप किया गया था, साथ छोड़ देते हैं। दुनिया स्वार्थ के वश चलती है; स्वार्थ सिद्धि तक लोग निकट रहते हैं और कार्य पूर्ण होने पर दूरी बना लेते हैं।₹

**पुण्य-पाप का लेखा-जोखा :**

आचार्य प्रवर ने उपस्थित जनमेदिनी को प्रेरित करते हुए कहा कि मनुष्य को कर्मवाद के सिद्धांत को समझकर हिंसा, झूठ और चोरी जैसे कार्यों से बचना चाहिए। पुण्य का फल सुखद होता है और पाप का दुखद, किंतु दोनों ही स्थितियों में कर्म का भोग व्यक्ति को स्वयं ही करना पड़ता है। अतः जितना संभव हो, धर्म के पथ पर अडिग रहना चाहिए।

**अणुव्रत प्रशिक्षण सम्मेलन का समापन :**

कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित पांच दिवसीय 'अणुव्रत कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्मेलन' का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। सोसाइटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ एवं मंत्री मनोज सिंघवी ने सम्मेलन के अनुभवों और आगामी कार्ययोजना पर अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य श्री ने कार्यकर्ताओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

> आचार्य श्री का आह्वान: पाप की कमाई से नहीं, धर्म की कमाई से होगा कल्याण

**विशेष आकर्षण :**

- कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल महामंत्र से हुआ।
- संतवृंद द्वारा प्रज्ञागीत का सुमधुर संगान किया गया।
- आचार्य श्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को ध्यान का प्रयोग करवाकर आत्मिक शांति का मार्ग दिखाया।
- अंत में संत-वृंद की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

# आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

## अनुभव पुरुष

आचार्य भिक्षु बौद्धिक पुरुष नहीं थे। वे अनुभव पुरुष थे। उन्होंने अनुभव के स्तर पर सत्य को उपलब्ध किया। बुद्धि के स्तर पर सत्य की व्याख्या करने वाले सत्य को सीमित कर देते हैं। वे सत्य को बांट देते हैं, तोड़ देते हैं, उसे सामयिक बना देते हैं। बुद्धि का सत्य हमेशा सामयिक होता है। जैसे-जैसे समय के चरण आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे सामयिक सत्य पुराना होता जाता है। पुराने का अर्थ है– वर्तमान के लिए अनुपयोगी, व्यर्थ। जैसे-जैसे समय के चरण आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे शाश्वत सत्य नया होता जाता है। नए का अर्थ है– आज के लिए उपयोगी, सार्थक।

एक भिखारी को कुछ आटा मिला। वह रोटी पकाने बैठा। एक रोटी सेक ली। एक रोटी सिक रही थी। एक रोटी का गीला आटा कठोती में था। एक रोटी का आटा उसके हाथ में था। एक रोटी अंगारे पर थी। इतने में एक कुत्ता आया। जो कठोती में था उसे ले भागा। आदमी उसके पीछे दौड़ा। जो हाथ में था वह नीचे गिरकर धूल में मिल गया। पीछे से एक बिल्ली आई। वह सिकी रोटी ले गई। तवे पर की रोटी जल गई। अंगारों पर की रोटी भी जल गई। पांचों रोटियां समाप्त हो गई। एक समाप्त, पांचों समाप्त। एक महाव्रत टूटा, पांचों टूटे।

वे साधक थे। साधना के लिए वे चले। सम्प्रदाय चलाने और मत बांधने की लालसा उन्हें छू तक नहीं गई थी। वे जब स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्यश्री रुघनाथजी से अलग हुए तब सम्प्रदाय चलाने के लिए नहीं, किन्तु भगवान् महावीर की वाणी के अनुसार चलने के लिए। महापुरुष चले वही मार्ग बन जाए, यह एक बात है और मार्ग बनाने के लिए चले, यह दूसरी बात है। वे किसलिए चले; यह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है—

'म्हे उणा नै छोड्या जद पांच वर्ष तांईं तो पूरो आहार न मिल्यो...। आहार-पाणी जाच नै उजाड़ में सर्व साथ परहा जावता। रुंखरा री छांयां आहार-पाणी मेल नै आतापना लेता। आथण रां पाछा गांव में आवता। इण रीते कष्ट भोगवता, कर्म काटता। म्हे या न जाणता, म्हारो मारग जमसी, नै म्हां में यूं दीक्षा लेसी, नै यूं श्रावक-श्राविका हुसी। जाण्यो, आत्मा रा कारज सारसां, मर पूरा देसां, इम जाण नै तपस्या करता...।'

वे चले और मार्ग बन गया। अनेक लोग उस मार्ग के पथिक बन गए। उन्होंने अपने जीवन-काल में १५ शिष्य बनाये, जिनमें से कुछ शिष्य अलग भी हो गए या अलग कर दिए गए। फिर भी वे शिथिल मार्ग पर चलने को राजी नहीं हुए। वे अभय थे। लोकैषणा उन्हें कभी विचलित नहीं कर सकी। सत्य की साधना में उनका जीवन बीता। उन्हें कटु सत्य भी सुधा-घूंट की तरह पीना पड़ा। किन्तु वे असत्य के लिए सत्य की बलि देने को तैयार नहीं हुए। भगवान् महावीर ने गोशालक पर मोहानुकम्पा की। इसे वे धर्म कैसे मान सकते थे? वह बड़ी समस्या थी। क्योंकि भगवान् भगवद्दशा में वीतराग और सब दोषों से परे होते हैं। साधना-काल में उनमें भी राग-द्वेष की परिणति होती है किन्तु साधारण लोग अति भक्तिवश ऐसा नहीं सुन सकते। यद्यपि आचार्य भिक्षु भगवान् महावीर के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु थे। फिर वे चले तत्त्व-विश्लेषण करने, इसलिए उन्हें कटु सत्य की कड़वी घूंट पीनी पड़ी। उन्होंने भगवान् महावीर के लिए लिखा–

**छह लेश्या हुंती जद वीर में, हुंता आठूं ही कर्म।**
**छद्मस्थ चूक्या तिण समै, मूरख थापै धर्म।।**

इस स्पष्टोक्ति के लिए उन्हें अनेक कटूक्तियां सहनी पड़ीं, पर वे मार्गगत अवरोधों से विचलित नहीं हुए।

जो व्यक्ति प्रकाशमय बन जाता है, आत्म-केन्द्रित हो जाता है। और जिसके लिए आगे पीछे, पहले और बाद में, आत्मा के अतिरिक्त कुछ शेष रहता ही नहीं, वह नहीं जानता कि यातना और पीड़ा क्या। होती है? भूख और प्यास क्या होते हैं? जो व्यक्ति यातनाओं को जानता है, यातनाओं का अनुभव करता है, वह वास्तव में यातना को सह नहीं सकता। कष्टों को जानने वाला, संवेदना करने वाला, कष्टों को सह नहीं सकता।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

# भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

## दूसरे पर रंग तब चढ़ता है

'वैरागी की वाणी सुनने से वैराग्य उत्पन्न होता है'– इस पर स्वामीजी ने दृष्टांत दिया– 'कसूंबा स्वयं गलता है, तब वह वस्त्रों को रंग सकता है। कसूंबा की गांठ बांध देने पर भी उसका वस्त्र पर रंग नहीं चढ़ता, क्योंकि वह स्वयं घुला हुआ नहीं है।'

'इसी प्रकार शुद्ध मान्यता और आचार वाला वैरागी साधु, जो स्वयं वैराग्य में लीन है, दूसरों पर वैराग्य का रंग चढ़ा देता है।'

जिस प्रकार श्रावक के तीन मनोरथ की चर्चा आगमों में उपलब्ध होती है, ठीक वैसी ही इस व्रत में और अभिनवता लाने के लिये तीन 'अभिनव मनोरथ' की भी चर्चा उपलब्ध होती है। जो आत्मिक के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष को भी सुंदर बनाता है। किंतु देखा जाए सभी के लिये उपयोगी हैं। वे मनोरथ कौन से हैं–

**कदा नु अहं आवेश मुक्तो भविष्यामि।**

अर्थात् कब मैं आवेश मुक्त बनूंगा?

आवेश एक ऐसी समस्या बन चुकी है जिससे निपटना सचमुच चुनौती है। लेकिन यह अनुप्रेक्षा इसका समाधान बन सकती है।

**कदा तु अहं अप्रामाणिकता मुक्तो भविष्यामि।**

**अर्थात् कब में अप्रामाणिकता से मुक्त होऊंगा।**

चाहे व्यापार हो या व्यवहार बेईमानी दोनों जगह ही त्याज्य है। नीतिमान पुरुष ही प्रगति कर सकता है।

**कदा नु अहं रूढिमुक्तो भविष्यामि**

अर्थात् कब में रूढिमुक्त बनूंगा?

धार्मिक क्षेत्र में इसका प्रचलन हो गया है। किंतु क्षेत्र धार्मिक हो या कार्मिक रूढिवादिता खतरनाक है। प्राणीमात्र इसका परिहार करे।

## क्या आप जानते हैं?

**आरो, एक्वागार्ड की प्रक्रिया से गुजरा हुआ पानी अचित्त माना जाए।**

## साप्ताहिक प्रेरणा

**॥ बाजार की मिठाई के त्याग करे ॥**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 अप्रैल - 19 अप्रैल 2026

# सफलता के लिए स्वच्छंदता का त्याग व अनुशासन अनिवार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

## जीवन के प्रथम भाग से ही आलस्य छोड़कर ज्ञान अर्जन में जुटने का आह्वान

**लाडनूं।**
**8 अप्रैल, 2026**

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में 'योगक्षेम' के कार्यक्रम पूरी दिव्यता के साथ गतिमान हैं। सुधर्मा सभा में 'स्वच्छंदता का निरोध करें' विषय पर अपनी ओजस्वी देशना देते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि जीवन में अनुशासन ही वह कवच है जो व्यक्ति को पतन से बचाकर सफलता के शिखर तक ले जाता है।

**सामुदायिक जीवन में अनुशासन की महत्ता :**

आचार्य प्रवर ने 'अनुशासनबद्धता' और 'स्वच्छंदता' के बीच के सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि कई बार व्यक्ति के मन में यह विचार आता है कि वह दूसरों के नियंत्रण में क्यों रहे? उन्होंने मार्गदर्शन दिया कि यदि साधना इतनी उच्च कोटि की हो कि व्यक्ति 'स्वानुशासी' बन जाए और उसके कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) अत्यंत मंद पड़ जाएं, तब तो पर-अनुशासन की आवश्यकता नहीं रहती। परंतु, एक स्वस्थ सामुदायिक जीवन के लिए अनुशासन में रहना अनिवार्य है।

> रण में प्रशिक्षित अश्व और जीवन में अनुशासित साधु ही पाता है पार
> -आचार्यश्री महाश्रमण

**आगम का उदाहरण : प्रशिक्षित अश्व और साधु :**

आगमों के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाते हुए आचार्य श्री ने फरमाया— ₹जिस प्रकार एक सुरक्षा कवच (तनुत्राण) से सुसज्जित और भली-भांति प्रशिक्षित अश्व ही रणक्षेत्र में विजय प्राप्त कर सकता है, उसी प्रकार अपनी स्वच्छंद प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने वाला साधु ही संसार सागर को पार कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।₹

**विनय से ही सर्वांगीण विकास :**

आचार्य श्री ने जोर देकर कहा कि चाहे गृहस्थ हो या साधु, कल्याण का मार्ग अनुशासन से ही प्रशस्त होता है। जो व्यक्ति जीवन के शुरुआती दौर से ही प्रमाद (आलस्य) का त्याग कर बड़ों के प्रति 'विनय' का भाव रखता है और उनके निर्देशों में शिक्षित होता है, उसका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित है। इसके विपरीत, स्वच्छंदता का मार्ग केवल विफलता की ओर ले जाता है।

**कार्यक्रम की मुख्य झलकियाँ:**

**प्रारंभः** आचार्य श्री के ओजस्वी मंगल महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

**प्रज्ञा गीतः** साध्वी वृन्द ने मधुर स्वर में प्रज्ञा गीत की प्रस्तुति दी।

**ध्यान प्रयोगः** प्रवचन से पूर्व आचार्य श्री ने पूरे धर्मसंघ को कुछ समय तक गहन ध्यान का अभ्यास करवाया।

**जिज्ञासा समाधान :** प्रवचन के पश्चात चारित्रात्माओं (साधु-साध्वियों) ने अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासाएं रखीं, जिनका आचार्य श्री ने समाधान किया।

# सम्पादकीय

## हमारी संस्कृति, हमारा गौरव और अक्षय तप

'इक्षु रस की एक धार से, खिला आज उपवन सारा,'
'धन्य हुए वे तप के राही, धन्य हुआ जग ये सारा'।
'अक्षय ज्ञान मिले सबको, अक्षय हो शुभ भाव यहाँ,'
'तप की शक्ति से महके, तेरापंथ का हर कोना कोना यहाँ'।।

अक्षय तृतीया का पर्व जैन परंपरा में मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि त्याग, तपस्या और अटूट श्रद्धा का जीवंत प्रतीक है। यह वह पावन दिवस है जो हमें युगों पीछे ले जाकर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के उस महान त्याग की याद दिलाता है, जहाँ से 'पारणा' और 'दान' की गौरवशाली संस्कृति का बीजारोपण हुआ था।

जैन इतिहास के पन्नों को पलटें तो हम पाते हैं कि भगवान आदिनाथ ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए एक वर्ष की लंबी निराहार तपस्या की थी। जब हस्तिनापुर की गलियों में इक्षु रस (गन्ने का रस) से उनका पारणा हुआ, तो वह क्षण इतिहास में अमर हो गया। वह दिन वैशाख शुक्ल तृतीया का था, जिसे आज हम 'अक्षय तृतीया' के रूप में मनाते हैं। ₹अक्षय₹ का अर्थ है जिसका कभी क्षय न हो—यानी वह पुण्य जो शाश्वत है।

आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ संचय की प्रवृत्ति बढ़ रही है, अक्षय तृतीया का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि 'देने' में जो आनंद है, वह 'पाने' में नहीं है। तेरापंथ धर्मसंघ के हम श्रावक, जो आचार्य श्री के मार्गदर्शन में संयम और अनुशासन की राह पर चल रहे हैं, हमारे लिए यह दिन आत्म-निरीक्षण का भी है। क्या हम अपने संचय को समाज और धर्म की सेवा में लगाने के लिए तत्पर हैं?

वर्षीतप की साधना करने वाले तपस्वियों के लिए यह दिन उनकी आध्यात्मिक विजय का उत्सव है। हज़ारों की संख्या में भाई-बहन कठिन तपस्या के बाद पारणा करते हैं, जो उनके आत्मबल और संयम की पराकाष्ठा है।

तेरापंथ टाइम्स के अक्षय तृतीया विशेषांक के माध्यम से हमारा प्रयास है कि हम भगवान ऋषभदेव के आदर्शों और तेरापंथ की गौरवशाली परंपराओं को हर घर तक पहुँचाएँ। आइए, इस अक्षय तृतीया पर हम केवल भौतिक वस्तुओं का ही नहीं, बल्कि अक्षय ज्ञान, अक्षय चारित्र और अक्षय अहिंसा का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित,

कार्यकारी संपादक...

## आचार्यश्री महाश्रमणजी : योगक्षेम चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत